04 - कणकां दी मुक गई राखी, ओ जट्टा आई बैसाखी

05 - इलेस्ट्रेशनः भाव, विचार, रेखाओं का समृद्ध संसार

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 13 अप्रैल, 2025

06 - धूमधाम से मनाया गया हनुमान दद्दा का जन्मोत्सव...

07 - देश भक्ति के साथ मसाला मनोज कुमार की पहचान

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 213, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

समानांतर ...

फोटो- गिरीश शर्मा

1300 रेलवे स्टेशनों का होना है कायाकल्प, 104 हो गए तैयार

● रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया-क्या-क्या होंगी सुविधाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शुक्रवार को बताया कि अमृत भारत योजना के तहत देशभर में 1,300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है, जिनमें से 104 पर काम पूरा हो चुका है। इस योजना का उद्देश्य पूरे रेलवे नेटवर्क में स्टेशनों को बेहतर और आधुनिक बनाना तथा यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2023 में स्टेशन पुनर्विकास योजना की आधारशिला रखी थी। मुंबई में जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में मीडिया को संबोधित करते हुए वैष्णव ने बताया कि इन 1,300 स्टेशनों में से कई में पुनर्विकास कार्य पूरा होने वाला है, जिनमें से 132 महाराष्ट्र में स्थित हैं। मंत्री ने कहा कि कई अन्य स्टेशनों पर काम में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। वैष्णव ने कहा, दुनिया में कहीं भी इस पैमाने पर स्टेशन पुनर्विकास परियोजना नहीं हुई है।

मंत्री ने संवाददाता सम्मेलन में योजना के तहत आने वाले स्टेशनों पर चल रहे काम की तस्वीरें दिखाईं, जिसमें मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) भी शामिल है, जिसे विश्वस्तरीय ट्रेन सुविधा के रूप में विकसित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सीएसएमटी स्टेशन के पुनर्विकास का काम बहुत बड़ा है, जिसकी अनुमानित लागत 1,800 करोड़ रुपये है और यह बहुत तेज गति से चल रहा है। मंत्री ने कहा कि पुनर्विकास कार्य पूरा होने पर दक्षिण मुंबई में ब्रिटिश काल का परिसर सीएसटीएम लंदन के किंग्स क्रॉस स्टेशन से कहीं बेहतर दिखाई देगा। वैष्णव ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं जैसे प्रतीक्षालय, फूड कोर्ट (भोजनालय), स्वच्छ शौचालय, लिफ्ट, एस्केलेटर और डिजिटल सुविधाओं से लैस करना है। सीएसएमटी के अलावा, महाराष्ट्र में इस योजना के तहत शामिल कुछ प्रमुख स्टेशन दादर (मध्य और पश्चिमी), अंधेरी (मुंबई), पुणे, नासिक रोड, नागपुर और छत्रपति संभाजीनगर समेत अन्य स्टेशन हैं। संवाददाता सम्मेलन में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस भी उपस्थित थे। इस दौरान मंत्री ने रेलवे की योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

सुप्रभात

डर है मत लिखिए

क्या पता तुम्हारे चालाक शब्दों से किसी
बेकसूर के जीने की प्रेरणा मरती हो
क्या पता ईर्ष्या की वजह से जेल में बंद
राजनीतिक बंदी नाउम्मीद हो रहा हो
क्या पता दम तोड़ रहे किसान के पास कोई
भरोसेमंद गीत ना बचा हो
उस वक़्त तो बिल्कुल मत लिखिए जब एक
पेड़ पतझड़ से गुज़र रहा हो उसे उदास होना
पसंद है निराश होना बिल्कुल नहीं
बेहतर है छुप जाना कभी शब्दों की ओट में
कभी नीयत में खोट से
कभी इतना चुप कि खुद की आवाज़ भी
पहचान ना सको।

– नीलोत्पल

नए वक्फ कानून को लेकर वेस्ट बंगाल में हिंसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुस्लिम बहुल मुर्शिदाबाद जिले में वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ निकाले गए विरोध प्रदर्शनों के दौरान भड़की हिंसा के मामले में 3 की मौत के बाद 120 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया है।पुलिस के मुताबिक, यह हिंसा शुक्रवार को उस वक्त भड़क गई जब प्रदर्शनकारियों ने कई जगहों पर सड़केंजाम कीं, पुलिस पर पथराव किया और वाहनों में आग लगा दी। हिंसा केवल मुर्शिदाबाद तक सीमित नहीं रही, बल्कि मालदा, साउथ 24 परगना और हुगली जिलों तक फैल गई।

तीन महीने के भीतर बिल पर लेना होगा फैसला

● पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति के लिए तय की समय सीमा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट का राज्यपाल के मामले में फैसला शुक्रवार को ऑनलाइन अपलोड हो गया है। इस फैसले में पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने निर्धारित किया है कि राष्ट्रपति को राज्यपाल की तरफ से उनके विचार के लिए आरक्षित विधेयकों पर संदर्भ प्राप्त होने की तिथि से तीन महीने की अवधि के भीतर निर्णय लेना चाहिए। शीर्ष अदालत की तरफ से तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि की तरफ से राष्ट्रपति के विचार के लिए रोके गए और आरक्षित किए गए 10 विधेयकों को मंजूरी देने और राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए सभी राज्यपालों के लिए समयसीमा निर्धारित की थी। फैसला करने के चार दिन बाद, 415 पृष्ठों का निर्णय शुक्रवार को रात 10.54 बजे शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर अपलोड किया गया। शीर्ष अदालत ने कहा कि हम गृह मंत्रालय की तरफ से निर्धारित समय-सीमा को अपनाना उचित समझते हैं... और निर्धारित करते हैं कि राष्ट्रपति को राज्यपाल की तरफ से उनके विचार के लिए

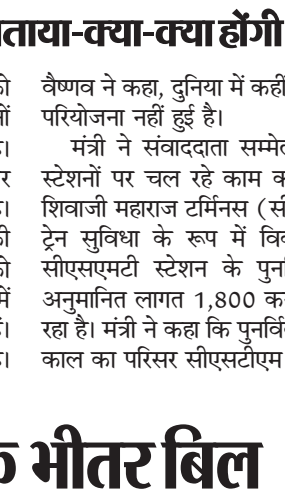

आरक्षित विधेयकों पर संदर्भ प्राप्त होने की तिथि से तीन महीने की अवधि के भीतर निर्णय लेना आवश्यक है। इस अवधि से परे किसी भी देरी के मामले में, उचित कारणों को दर्ज करना होगा और संबंधित राज्य को सूचित करना होगा। राज्यों को भी सहयोगात्मक होना चाहिए और उठाए जा सकने वाले प्रश्नों के उत्तर देकर सहयोग करना चाहिए और केंद्र सरकार द्वारा दिए गए सुझावों पर शीघ्रता से विचार करना चाहिए।

गौ-शालाओं से मध्यप्रदेश में गौ-सेवा की लिखेंगे नई इबारत : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने महू में हाईटेक सुविधाओं से युक्त कामधेनु गौ-शाला का किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में गौ-संरक्षण और संवर्धन की दिशा में राज्य सरकार द्वारा तेजी से संकल्पबद्ध होकर कार्य किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्?द्र मोदी के संकल्प को पूरा करने के लिए गौ-शालाओं के विस्तार के लिए योजनाबद्ध रूप से प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में गौ-शालाओं के माध्यम से गौ-सेवा की नई इबारत लिखी जाएगी और प्रदेश में नई दुग्ध क्रांति लाई जाएगी। इससे दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के साथ ही दुग्ध उत्पादकों की आमदनी में भी वृद्धि की जाएगी। हमारा प्रयास है कि दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध के बेहतर दाम मिले। इस दिशा में हम तेजी से प्रयास कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को इंदौर जिले के महू-मण्डलेश्वर मार्ग पर स्थित आशापुरा में प्रदेश में हाईटेक कामधेनु गौ-शाला के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस गौ-शाला में 10 हजार गायों के पालन-पोषण की व्यवस्था रहेगी। यह गौ-शाला लगभग 25 हेक्टेयर क्षेत्र में बनाई जा रही है। इस गौ-शाला का निर्माण इंदौर नगर निगम द्वारा किया जायेगा। इसकी देखरेख की जिम्मेदारी भी नगर निगम ही संभालेंगी। गौ-शाला के संचालन में संत समाज का सहयोग भी लिया जायेगा। गौ-शाला के संचालन में समाजसेवी निःस्वार्थ भाव से गौ-सेवा के कार्यों में जुड़ सकेंगे। गायों के पालन और संरक्षण के लिये सभी जरूरी सुविधाएं गौ-शाला में रहेंगी। गौ-शाला क्षेत्र में सघन पौध-रोपण भी किया जायेगा। कार्यक्रम में महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, राज्यसभा सदस्य सुश्री कविता पाटीदार, विधायक सुश्री उषा ठाकुर, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना सतीश मालवीय, श्री सुमित मिश्रा, श्री श्रवण चावड़ा, श्री निरंजन सिंह चौहान सहित जनप्रतिनिधि और स्वामी श्री अच्युतानंद जी महाराज विशेष रूप से मौजूद रहे।

गौ-माता की सेवा हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का अहम हिस्सा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौ-माता की सेवा हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का अहम हिस्सा है। गौ-माता में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास होता है, जो हमारे लिये पूजनीय है। उन्होंने कहा कि गौ-वंश के संरक्षण और संवर्धन के लिये राज्य शासन ?निरंतर प्रयासरत है। हमने यह वर्ष गौ-माता की सेवा को समर्पित किया है। गौ-वंश को बढ़ावा देने के लिये डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नाम से योजना प्रारंभ की गयी है। इस योजना में गौ-वंश पालकों को अनुदान दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि गौ-संरक्षण एवं गौ-संवर्धन के लिये मध्यप्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। प्रदेश में स्वावलंबी गौ-शालाओं की स्थापना नीति-2025 बनायी गयी है। निराश्रित गौ-वंश की समस्या का समाधान गौ-शालाओं की स्थापना से किया जा रहा है।

गौ-सेवा कर, बछिया को दुलारा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम के प्रारंभ में गौमाता का पूजन कर गौ-ग्रास भी खिलाया। मुख्यमंत्री ने बछिया को गोद में लेकर स्नेह से दुलार किया। महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव ने अपने सम्बोधन में कहा कि मध्यप्रदेश में हर क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में विकास की नयी इबारत लिखी जा रही है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा गौ-वंश के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये कृत संकल्पित होकर कार्य किये जा रहे हैं। हातोद स्थित गौ-शाला का कायाकल्प किया गया। इसे उच्च सुविधाओं से युक्त किया गया है। इससे गायों की संख्या बढ़कर 650 से 2 हजार हो गयी। इंदौर देश की एकमात्र ऐसी नगर निगम होगी जहाँ गौ-सेवा के लिये सवा सौ बीघा भूमि पर गौ-शालाये होंगी। स्वामी श्री अच्चुतानंदजी महाराज ने कहा कि गौ-रक्षा की दिशा में यह सबसे बड़ा प्रकल्प है। यह गौ-शाला देश की अन्य गौ-शालाओं के लिये उत्कृष्ट उदाहरण बनेगी।

छत्तीसगढ़ में एनकाउंटर तीन नक्सली ढेर

● मौके से भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक बरामद

दंतेवाड़ा/बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में दंतेवाड़ा-बीजापुर बॉर्डर के भैरमगढ़ इलाके में पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ चल रही है। सुबह 9 बजे से दोनों तरफ से फायरिंग जारी है। जिसमें जवानों ने 3 माओवादी को ढेर किया है। तीनों के शव के साथ हथियार बरामद किया गया है। दंतेवाड़ा जिले के एसपी गौरव राय ने मुठभेड़ की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि बीजापुर के इंद्रावती क्षेत्र के जंगलों में माओवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी, जिसके बाद करीब 400 जवानों को ऑपरेशन के लिए रवाना किया गया। जवानों ने 2025 में अब तक 146 नक्सलियों को मार गिराया है। एसपी गौरव राय के मुताबिक, दोनों जिलों का यह जॉइंट ऑपरेशन है। सर्च अभियान अभी जारी है। एनकाउंटर में माओवादियों को भारी नुकसान होने की संभावना है। मुठभेड़ खत्म होगी तब स्थिति क्लियर होगी। नक्सलियों को कितना नुकसान हुआ है, इसके बाद ही पता लग पाएगा। फिलहाल मुठभेड़ जारी है। दंतेवाड़ा और बीजापुर बॉर्डर पर सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 45 लाख की इनामी महिला नक्सली लीडर रेणुका उर्फ बानू को ढेर किया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 13 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

झारखंड में दो दिनों में सीएम हेमंत का डबल धमाका

- बाबूलाल मरांडी के बाद अब सुदेश महतो को दिया झटका

रांची (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव 2025 में बड़ी जीत हासिल कर दोबारा सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन अब संगठन को और अधिक मजबूत बनाने में जुटे हैं। झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के संगठन विस्तार की रणनीति के तहत राज्य के विभिन्न जिलों के सामाजिक कार्यकर्ताओं का जेएमएम में शामिल होने का सिलसिला जारी है। संताल

परगना प्रमंडल के दौरे के क्रम में एक दिन पहले बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ताला मरांडी ने जेएमएम का दामन थाम लिया, वहीं शनिवार को रांची में जेएमएम ने आजसू पार्टी को झटका दिया है। आजसू पार्टी के संस्थापक सदस्य कमल किशोर भगत की पत्नी नीरू शांति भगत जेएमएम में शामिल हो गईं। जेएमएम के केंद्रीय महासचिव विनोद पांडे ने नीरू शांति भगत को पार्टी की सदस्यता दिलाई। नीरू शांति भगत के साथ उनके कई समर्थकों ने आजसू पार्टी छोड़कर जेएमएम की सदस्यता ली। नीरू शांति भगत 2019 और 2024 में लोहरदगा सीट से आजसू के टिकट पर चुनाव लड़ चुकी हैं।

भोपाल में एडीजी इंटेलिजेंस के ड्राइवर की मौत

पुलिस की एमटी शाखा के जवान को परवलिया इलाके में अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के परवलिया क्षेत्र में एक तेज रफ्तार वाहन की टक्कर से पुलिस जवान आनंदी लाल (38) की मौत हो गई। मृतक एडीजी इंटेलिजेंस का सरकारी वाहन चलाते थे और मूल रूप से एमटी शाखा में तैनात थे।

जानकारी के अनुसार आनंदी लाल अपने रिश्तेदार से मिलकर भोपाल लौट रहे थे। रात करीब 11 बजे हुए इस हादसे में उनकी बाइक एक खंभे से टकरा गई, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया, लेकिन शुक्रवार सुबह 7:30 बजे इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश में उस रास्ते से गुजरने वाले वाहनों की जानकारी जुटा रही है, लेकिन अभी तक वाहन का पता नहीं चल सका।

आनंदी के बुजुर्ग पिता गंगाधर ने बताया, हमारा सहारा चला गया। आनंदी पांच भाई-बहनों में सबसे बड़ा था और पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी के कंधों पर थी। मृतक का 8 साल का एक बेटा है। पत्नी गहरे सदमे में बेसुध पड़ी हैं।

आनंदी ने तीन बहनों की शादी करवाई, छोटे भाई की पढ़ाई का खर्च उठाया और दो साल पहले सड़क हादसे में जान गंवाने वाले चाचा की चार बेटियों की जिम्मेदारी भी संभाली।

थाना प्रभारी रोहित कुमार के मुताबिक, हादसे की रात उस रास्ते से गुजरे वाहनों की जानकारी जुटाई जा रही है, लेकिन अभी तक अज्ञात वाहन ट्रेस नहीं हो सका है।

तेजस्वी यादव के मिशन 'कोर वोटर' का खुलासा!

- लालू के प्लान ने बिगाड़ा नीतिश और जीतन राम मांझी का खेल

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरने के बावजूद सत्ता हासिल करने से चूकने के पांच साल बाद, आरजेडी नेता तेजस्वी यादव एक मिशन पर हैं। पार्टी के सामाजिक आधार का विस्तार करना और एक मेरी पार्टी की छवि को तोड़ना। तेजस्वी, वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ चौपालों की घोषणा करके पार्टी के मुस्लिम मतदाता वर्ग को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं वे अत्यंत पिछड़ा वर्ग (ईबीसी) के अस्थायी मतदाताओं के बीच से एक नया मतदाता वर्ग बनाने की कोशिश भी कर रहे हैं। ये वो वोटर हैं, जो 2023 के जाति

सर्वेक्षण के अनुसार राज्य की आबादी का 36.1 फीसदी है। और अनुसूचित जाति (एससी), जो आबादी का 19.65 फीसदी है। तेजस्वी ने अन्य सामाजिक समूहों तक पहुंच बनाकर राजद को मेरी पार्टी से 'ए टू जेड' पार्टी में बदलने के अपने प्रयासों के बारे में खुलकर बात की है। जबकि ईबीसी को ऐसे मतदाता माना जाता है जो किसी विशेष पार्टी या नेता से बंधे नहीं होते हैं, गैर-पासवान दलितों को भी इस श्रेणी का हिस्सा माना जाता है। पासवान, जो आबादी का 5.3 फीसदी हिस्सा हैं, बड़े पैमाने पर केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) का वफादार वोट बैंक हैं। यही कारण है कि आरजेडी हाल ही में मुसहरों के बीच अपनी उपस्थिति मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है।

आज भोपाल आएंगे केंद्रीय मंत्री अमित शाह

रविंद्र भवन के आसपास फ्लाइंग ऑब्जेक्ट पर प्रतिबंध, पुलिस कमिश्नर ने आदेश जारी किए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में रविवार 12 अप्रैल को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का दौरा प्रस्तावित है। इसे देखते हुए रविंद्र भवन और आसपास के पांच किलो मीटर के दायरे में ड्रोन, पैराग्लाईडर, हॉट बैलून, अन्य फ्लाइंग ऑबजेक्ट उड़ानों पर रविवार की सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। पुलिस कमिश्नर हरीनारायणचारी मिश्रा ने यह आदेश शनिवार की दोपहर जारी किए हैं। जानकारी के मुताबिक गृहमंत्री अमित शाह को+सुरक्षा दर्जा के साथ सीआरपीएफ सुरक्षा कवर प्राप्त है। उनके भोपाल में भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। उनकी+ सुरक्षा को देखते हुए रविंद्र भवन भोपाल से 5 किलोमीटर की परिधि में ड्रोन, पैराग्लाईडर, हॉट बैलून, अन्य फ्लाइंग ऑबजेक्ट के उड़ने पर प्रतिबंध रहेगा। साथ ही कार्यक्रम स्थल के आसपास के पांच किलोमीटर एरिया को रेड जोन, नो फ्लाइंग जोन घोषित किया है।

कॉमर्शियल फ्लाइट्स प्रतिबंधात्मक आदेश से मुक्त रहेंगी

इस आदेश का उल्लंघन पाये जाने पर दोषी व्यक्ति के विरूद्ध नियमानुसार भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के अंतर्गत वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। कॉमर्शियल फ्लाइट्स इस प्रतिबंधात्मक आदेश के पालन से मुक्त रहेंगी।

सीएम की पहल पर प्रदेश को मिला 25वां अभयारण्य

सागर में डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य की अधिसूचना जारी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की जैव विविधता संरक्षण के लिए की गई पहल पर मध्यप्रदेश को एक और नया अभयारण्य मिल गया है। सागर जिले के 258.64 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र में नया अभयारण्य बनाया जा रहा है। इस नये अभयारण्य को ञडॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्यस के नाम से जाना जायेगा। राज्य सरकार ने इस नये अभयारण्य की अधिसूचना भी जारी कर दी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर जानकारी देते हुए कहा कि यह अभयारण्य न केवल वन्य जीवों को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करेगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय रोजगार सृजन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बाबा साहेब के नाम समर्पित यह अभयारण्य संविधान निर्माता के प्रति हमारे सम्मान और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। यह निर्णय समावेशी विकास एवं हमारे संकल्प की दिशा में एक नया कदम और बाबा साहेब को सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर अभयारण्य, सागर जिले के उत्तर सागर वन मंडल अंतर्गत बंडा और शाहगढ़ तहसीलों के आरक्षित वन क्षेत्र में स्थापित किया गया है, जिसकी कुल सीमा 25,864 हेक्टेयर (यानी 258.64 वर्ग किलोमीटर) होगी।

इस अभयारण्य के गठन से क्षेत्रीय पारिस्थितिक तंत्र को सुदृढ़ करने के साथ-साथ खाद्य श्रृंखला को संतुलित बनाए रखने में मदद मिलेगी। इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

10 तारीख गुजर गई, लाड़ली बहनें करती रहीं इंतजार

अब 16 को सीएम ट्रांसफर करेंगे 22वीं किश्त

भोपाल (नप्र)। विधानसभा चुनाव से पहले शुरू की गई 'लाड़ली बहना योजना' की इस महीने की किश्त अब तक लाभार्थी महिलाओं के खातों में नहीं पहुंची है। तय तिथि गुजर जाने के बाद भी राशि न आने पर कांग्रेस ने सवाल खड़े किए हैं।

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी सहित पार्टी के अन्य नेताओं ने इसे सरकार की वादाखिलाफी बताया है। वहीं, भाजपा नेताओं का कहना है कि योजना के तहत हर महीने किश्त समय पर दी जाती रही है और जल्द ही इस बार की राशि भी ट्रांसफर कर दी जाएगी।

पटवारी ने एक्स पर लिखा- 'लाड़ली बहना योजना' की किस्त को लेकर पहले बड़े-बड़े होर्डिंग देखने को मिलते थे, लिखा रहता था, 'लाड़ली बहनों 10 तारीख आ रही है'। लेकिन, इस बार 10 तारीख को लाड़ली बहनों के खाते में पैसे ही नहीं आए। क्या कर्ज में कमी हो गई या सरकार की नीयत बदल गई?

मंत्री बोलीं- पैसे खातों में हर महीने हो रहे ट्रांसफर

पटवारी के बयान को लेकर मीडिया ने महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया से लाड़ली बहना योजना की किश्त न आने को लेकर पूछा तो उन्होंने कहा- लाडली बहना योजना की राशि हर महीने जा रही है। सभी के खातों में लाड़ली बहना की राशि डाली जाएगी। कोई किश्त नहीं रूकेगी।

मंडला से सीएम करेंगे राशि ट्रांसफर

विभागीय अधिकारियों की मानें तो 16 अप्रैल को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव मंडला में लाड़ली बहना योजना की राशि ट्रांसफर करेंगे। मंडला कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का 16 अप्रैल को मंडला में कार्यक्रम प्रस्तावित है। वे टिकरवारा गांव में आयोजित 1100 बेटियों के सामूहिक विवाह सम्मेलन में शामिल होंगे। इसी कार्यक्रम के दौरान वे लाड़ली बहना योजना की राशि का अंतरण करेंगे। निर्माण कार्यों का भूमिपूजन-लोकार्पण भी होगा।

जमीन बेचो वरना टुकड़े कर ड्रम में भरवा दूंगी!

बांदा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के गिरवां थाना क्षेत्र से एक ऐसा सनसनीखेज मामला सामने आया है, जो मेरठ के चर्चित सौरभ हत्याकांड की याद दिला रहा है। यहां एक 42 वर्षीय युवक ने अपनी पत्नी पर जान से मारने की धमकी देने, अवैध संबंधों और लगातार मानसिक प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक से सुरक्षा की गुहार लगाई है। पति ने पत्नी पर जमीन बेचने के लिए दबाव बनाने का आरोप लगाया है। इस मामले में पति का कहना है कि पत्नी उसे बार-बार जान से हाथ धो बैठने की धमकी दे रही है। पीड़ित पति का आरोप है कि उसकी पत्नी का पिछले तीन वर्षों से औरैया जनपद के एक युवक से प्रेम संबंध चल रहा है। हालात तब और बिगड़ गए जब एक रात आरोपी प्रेमी उसके घर में घुस आया।

झाबुआ में टैम्पो ट्रैक्स पलटा, 4 की मौत, 2 गंभीर

जहर खाए व्यक्ति को अस्पताल ले जा रहे थे

झाबुआ (नप्र)। झाबुआ में पेटलावद के रायपुरिया थाना क्षेत्र में बोलासा घाट पर शुक्रवार रात करीब 11 बजे सवारी वाहन (टैम्पो ट्रैक्स) पलटने से महिला समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में 8 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इलाज के दौरान एक और व्यक्ति ने दम तोड़ दिया। इस तरह मृतकों की संख्या 4 हो गई है। सभी घायलों को पेटलावद

सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में 2 की हालत ज्यादा गंभीर है, जिन्हें गुजरात के दाहोद रेफर किया गया है।पेटलावद थाना प्रभारी दिनेश शर्मा ने बताया कि सभी लोग धार जिले के रहने वाले हैं। ये लोग परिवार के एक व्यक्ति को जहर खाने के बाद इलाज के लिए पेटलावद सिविल अस्पताल लेकर जा रहे थे। इसी दौरान बोलासा घाट पर वाहन चालक ने संतुलन खो दिया और गाड़ी पलट गई।

खेलते-खेलते पानी से भरे गड्ढे में डूबीं तीन बहनें, मौत

सतना (नप्र)। सतना में सड़क निर्माण के लिए खोदे गए गड्ढे में डूबने से तीन बहनों की मौत हो गई। बच्चियां फिसलकर पानी में जा गिरीं। जब तक ग्रामीण उन्हें बचा पाते, तब तक देर हो चुकी थी। पुलिस से ठेकेदार मान सिंह तोमर के खिलाफ लापरवाही से मौत का केस दर्ज किया है। घटना जसो थाना क्षेत्र के रीछुल गांव में शनिवार दोपहर की है। यहां सड़क निर्माण के लिए महीने पहले गड्ढा खोदा गया था। राजकुमार चौरसिया की बेटियां तान्या (8) और 5 साल की जुड़वां बहनें जान्हवी और गौरी घर के पास खेल रही थीं। खेलते-खेलते गड्ढे तक पहुंच गईं, जो बारिश के पानी से पूरी तरह भर चुका था।

ठेकेदार पर लापरवाही का आरोप-एक ही परिवार की तीन बच्चियों की मौत से गांव में मातम का माहौल है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि यह मौतें प्रशासन की लापरवाही और ठेकेदार की गैरजिम्मेदारी का नतीजा हैं। यह गड्ढा निर्माणाधीन नागौद-सलेहा बाईपास के लिए ठेकेदार मान सिंह तोमर ने तीन महीने पहले खुदवाया था।

ग्रामीण बोले- दोषियों को मिले सजा-गांव वालों का कहना है कि ठेकेदार ने गड्ढा खोदकर ऐसे ही छोड़ दिया था, न तो कोई चेतावनी बोर्ड लगाया और न ही आसपास कोई सुरक्षा व्यवस्था की गई।

जम्मू-कश्मीर के अखनूर में सेना का जेसीओ शहीद

- किश्तवाड़ में सुरक्षाबलों ने जैश के 3 आतंकी मार गिराए, सर्च ऑपरेशन जारी

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-जिले के अखनूर में शनिवार को आतंकवादियों से मुठभेड़ में 9 पंजाब रेजिमेंट के जेसीओ कुलदीप चंद शहीद हो गए। अखनूर के केरी बट्टल इलाके में शुक्रवार देर रात एनकाउंटर शुरू हुआ था। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेरा हुआ है। सेना ने एक्स पर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी। वहीं, शुक्रवार को किश्तवाड़ जिले के घने जंगलों में एनकाउंटर के दौरान सुरक्षाबलों ने शुक्रवार देर रात तक 3 आतंकियों को मार गिराया। ऑपरेशन रात से चल रहा है। अधिकारियों ने बताया कि मारे गए तीनों आतंकी जैश-ए-मोहम्मद के हैं। इनमें टॉप कमांडर सैफुल्लाह भी शामिल है। इससे पहले 4 और 5 अप्रैल की दरमियानी रात जम्मू में एलओसी पर आरएस पुरा सेक्टर पर सेना के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को मार गिराया था। वहीं, 1 अप्रैल को एलओसी पर सेना के एनकाउंटर में 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मारा गया था।

देशभर में यूपीआई सर्विस ठप्प, यूजर रहे परेशान

- 3 घंटे से ज्यादा समय तक रही डाउन, बनी हुई है दिक्कत
- 20 दिन में तीसरी बार आई परेशानी, ट्रांजेक्शन में समस्या

मुंबई (एजेंसी)। देशभर में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस यानी यूपीआई सर्विस में करीब तीन घंटे तक समस्या रही। सुबह करीब 11.30 बजे से 1.00 बजे तक सबसे ज्यादा पेमेंट फेल्योर रिपोर्ट की गई।

काफी देर तक लोगों को यूपीआई पेमेंट करने में दिक्कत आ रही है। बीते 20 दिन में यह तीसरी बार है जब ट्रांजेक्शन में समस्या हो रही है। वेबसाइट और ऑनलाइन सर्विसेज की रियलटाइम स्टेटस बताने वाला प्लेटफॉर्म डाउनडिटेक्टर के अनुसार के अनुसार, समस्या फेस कर रहे करीब 81 फीसदी लोगों को पेमेंट करने में समस्या आ रही है। 17 फीसदी लोगों को फंड ट्रांसफर करने और लगभग 2 फीसदी को खरीदारी करने में दिक्कतें हुईं।

नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने बताया, रुक-रुक कर टेक्निकल इश्यू का सामना करना पड़ रहा है, जिसके चलते यूपीआई ट्रांजेक्शन में

दिक्कत हो रही है। हम इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रहे हैं, और आपको अपडेट रखेंगे। आपको हुई असुविधा के लिए खेद है। समस्या सुबह करीब 11.30 बजे शुरू हुई थी। तब इस प्लेटफॉर्म पर करीब 900 लोगों ने रिपोर्ट की थी। दोपहर करीब 1.00 बजे सबसे ज्यादा 2400 लोगों ने समस्या रिपोर्ट की थी। दोपहर 2.30 बजे समस्या में सुधार देखने को मिल रहा है। अभी केवल 300 यूजर्स ने रिपोर्ट दर्ज की है।

- **शिकायतों की संख्या पहुंची 2 हजार के पार**- डाउनडिटेक्टर पर यूपीआई डाउन होने की शिकायत में दोपहर 12 बजे के आसपास तेजी आई। खबर लिखे जाने तक शिकायतों की संख्या 2 हजार के पार पहुंच गई थीं। डाउनडिटेक्टर वेबसाइट पर लाइव ग्राफ के अनुसार दोपहर 1:01 बजे तक टोटल 2,333 यूजर्स ने यूपीआई डाउन होने की शिकायत की है।
- **20 दिन में दो बार डाउन हुई यूपीआई सर्विस**- पिछले 26 फरवरी को यूपीआई सर्विस करीब ढाई घंटे डाउन रही थी। तब लोगों को गूगल पे और पेटीएम जैसे एप से अमाउंट ट्रांसफर करने में दिक्कतें हुईं। इस दौरान 10 से ज्यादा बैंकों के यूपीआई व नेट बैंकिंग सर्विसेस पर भी असर पड़ा।

तुलसी के बयान से फिर बाहर आया ईवीएम का जिन्न

- सुरजेवाला बोले- स्वतः संज्ञान लेकर जांच कराए सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्ट्रिोनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) की हैकिंग को लेकर एक बार फिर राजनीति गर्म हो गई है। कांग्रेस महासचिव रणदीप सुरजेवाला ने हैकिंग को लेकर अमेरिका की खुफिया विभाग की प्रमुख के बयान का हवाला देते हुए पीएम मोदी और निर्वाचन आयोग की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए सुप्रीम कोर्ट से इस मामले पर स्वतः संज्ञान लेकर जांच कराने की मांग की है। हालांकि इन सभी बातों के बीच चुनाव आयोग के सूत्रों की तरफ से यह साफ कर दिया गया है कि भारतीय ईवीएम को इंटरनेट या वाईफाई से नहीं जोड़ा जा सकता न ही इसे हैक किया जा सकता है। सुरजेवाला ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर तुलसी गबार्ड के बयान का हवाला देते हुए कहा कि गबार्ड ने सार्वजनिक रूप से ईवीएम की

हैकिंग और उसकी कमजोरियों के मुद्दे को उठाया है। उन्होंने लिखा, वास्तव में गबार्ड ने कहा कि चुनाव के नतीजों में हेराफेरी के लिए ईवीएम का दुरुपयोग किया जा सकता है। सवाल यह है कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त और निर्वाचन आयोग इस मामले पर चुप क्यों है। तुलसी गबार्ड ने जो कहा उसे नकारने के लिए आयोग सूत्रों के आधार पर कहानियां क्यों कह रहा है। प्रधानमंत्री और एनडीए सरकार और भाजपा इस मामले पर चुप क्यों है। सुरजेवाला ने कहा कि हमारे निर्वाचन आयोग को और केंद्र सरकार को ईवीएम की हैकिंग और अन्य कमजोरियों के सभी तौर-तरीके और कारण हासिल करने के लिए तुलसी गबार्ड से संपर्क करना चाहिए.. कि आखिर वह कैसे और किस आधार पर यह बात कर रही हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा कि क्या भारत के उच्चतम न्यायालय को इस मुद्दे पर स्वतः संज्ञान नहीं लेना चाहिए.. और यह मानते हुए इसकी गहन जांच नहीं करानी चाहिए कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव ही संवैधानिक लोकतंत्र की बुनियादी संरचना है। कांग्रेस नेता के सवालों के पहले चुनाव आयोग के सूत्रों ने तमाम अटकलों को खारिज कर दिया।

भूकंप के झटकों से दहल गया आधा पाकिस्तान

- रिएक्टर स्केल पर 5.8 मापी गई तीव्रता, घरों से बाहर निकले लोग

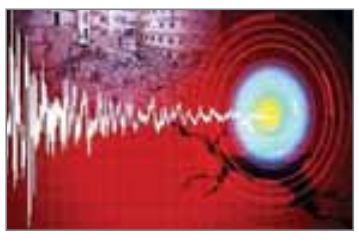

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में शनिवार दोपहर को भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी ने अपने बयान में बताया है कि रिएक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.8 मापी गई है। पंजाब और केपीके प्रांत के बड़े हिस्से में लोगों ने भूकंप के झटके महसूस किए हैं। भूकंप का केंद्र राजधानी इस्लामाबाद के पास रावलपिंडा में था। भूकंप के तेज झटकों से स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई और लोग घरों के बाहर निकल आए। पाकिस्तान सरकार की ओर से भूकंप की वजह से जानमाल के किसी नुकसान की जानकारी अभी नहीं दी गई है। पाक वेबसाइट जियो टीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, शनिवार दोपहर को पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद, रावलपिंडी, अटक, चकवाल और पंजाब के दूसरे शहरों में झटके में महसूस किए गए।

परिक्रमा

विपक्ष का लक्ष्य परिवार का विकास और संघर्ष मोड में कांग्रेस

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्षी दलों यानी इंडिया ब्लाक पर हमला करते हुए कहा है कि विपक्ष का एकमेव लक्ष्य परिवार का साथ और परिवार का विकास है। मध्यप्रदेश के अशोकनगर में उन्होंने कहा कि सेवा ही ऐसी गंगा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति डुबकी लगाकर जीवन को सार्थक कर सकता है। मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि आतंकवाद और युद्ध जैसी चुनौतियों का समाधान जैन धर्म के सिद्धान्तों से ही किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने लोगों को नौ संकल्प भी दिलाये। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी के गृह राज्य गुजरात में साबरमती के तट से कांग्रेस ने अपने दो दिवसीय अधिवेशन में इस बात का ऐलान किया कि हम आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ रहे हैं, उसने यहां न्यायपथ प्रस्ताव पारित कर संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प भी लिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने संतों के कथन का हवाला देते हुए अशोकनगर में कहा कि यहां पर शोक भी आने से डरता है। मध्यप्रदेश के तत्कालीन संस्कृति मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के जिस ड्रीम प्रोजेक्ट के बारे में काफी काम किया था उसे आगे बढ़ाते हुए मोदी ने कहा कि देश में राम पथ गमन का विकास करेंगे जिसका अहम हिस्सा मध्यप्रदेश से गुजरेगा। उनका कहना था कि हम देश में राम पथ गमन का विकास कर रहे हैं। मध्यप्रदेश सरकार भी अभी से उज्जैन सिंहस्थ की तैयारी में जुट गयी है, मध्यप्रदेश तो पहले से ही अजब और गजब है और ऐसे कामों से उसकी पहचान और मजबूत होगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस बात पर जोर दिया कि गरीब की सेवा करना ही सच्चा परमार्थ है और गरीब की आत्मा में रच-बस जाना ही सच्ची मानव सेवा है। जिस प्रकार आनंदपुर धाम में सेवा का केंद्र बना है, हमारी सरकार भी ऐसा ही सेवा केन्द्र बनायेगी और हम गौ-माता की सेवा भी करेंगे। आनंदपुर धाम में यही सीखने को मिला कि गरीबों की सेवा कर ईश्वर के करीब कैसे जाया जा सकता है।

मंदिर धुलवाते हैं भाजपा के लोग

कांग्रेस पार्टी अब निष्क्रिय लोगों की छुट्टी करने वाली है इसका संकेत साबरमती नदी के तट पर 84वें महाधिवेशन में कांग्रेस ने दिये और वह अब अल्पसंख्यकों के साथ दलितों और पिछड़े वर्ग के लोगों को भी अपनी ओर आकर्षित करने का

अभियान छेड़ने वाली है। भाजपा के ऊपर दलितों को लेकर उसकी यानी भाजपा की कथित मानसिकता पर जोरदार शाब्दिक हमला करते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि राजस्थान में विपक्ष के नेता दलित हैं और वे रामनवमी पर दर्शन करने मंदिर गये तो भाजपा नेताओं ने वहां गंगाजल छिड़का, यह शर्म की बात है। जो दलित और पिछड़े हैं वह भी तो आखिर इंसान ही हैं। जब प्रतिपक्ष के नेता के साथ ऐसा है तो सोचिए जो देहात में रहने वाले दलित हैं उनके क्या हालात होंगे। वहीं दूसरी ओर लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी का कहना था कि भाजपा दलितों को मंदिर नहीं जाने देती और कोई चला गया तो मंदिर धुलवाती हैं, कांग्रेस और भाजपा में यही फर्क है। आर्गनाइजर में वक्फ बिल पास होने पर जो लेख छपा है उसका हवाला देते हुए राहुल गांधी ने कहा कि अब ईसाई समाज की जमीन पर कब्जा करेंगे, यानी यह किसी को नहीं छोड़ेंगे। चूंकि यह मामला दलितों से जुड़ा हुआ है और भाजपा दलितों को रिझाने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देती इसलिए राजस्थान में पूर्व भाजपा विधायक ज्ञानदेव आहूजा, जिन्होंने अलवर में राम मंदिर में गंगाजल छिड़क कर शुद्धीकरण किया था और एक दिन पहले यहां समारोह में कांग्रेस नेता जूली शामिल

हुए थे। इस पर भाजपा ने नोटिस जारी कर पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा को पार्टी से ही निलंबित कर दिया। उसका यह कदम कितना असर दिखाता है यह तो आने वाले समय में ही पता चलेगा, लेकिन कांग्रेस इस मुद्दे को आसानी से छोड़ती नजर नहीं आ रही। इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन यानी ईवीएम पर निशाना साधते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने आरोप लगाया कि भाजपा महाराष्ट्र में धांधली करके चुनाव जीती, पूरी दुनिया बैलेट पेपर पर शिफ्ट हो रही है। उन्होंने चुनाव में धांधली, अमेरिकी टेरिफ, वक्फ संशोधन कानून और लोकतंत्र के मुद्दे को लेकर भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी पर इशारों ही इशारों में निशाना साधा। उनका आरोप था कि आज सरकार हर तरफ दखल बढ़ा रही है, इसलिए कांग्रेस अब आजादी की दूसरी लड़ाई लड़ रही है। पूरी दुनिया ईवीएम से बैलैट पेपर की ओर बढ़ रही है लेकिन हम ईवीएम का उपयोग कर रहे हैं जो एक धोखाधड़ी है।

कांग्रेस के महाधिवेशन में उसके अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे काफी आक्रामक मुद्रा में नजर आये। उन्होंने यह भी कहा कि चुनावी संस्थाएं भी सरकार के कब्जे में हैं, सरकार हर चीज में दखल दे रही है, चुनाव में स्कैम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रानिक तकनीक में विकास के साथ ही दुनिया के विकसित देशों ने ईवीएम को छोड़ दिया और बैलेट पेपर अपना लिया है। दुनिया में कहीं भी ईवीएम उपलब्ध नहीं है। उन्होंने मांग की है कि ईवीएम नहीं बैलेट पेपर से चुनाव होने चाहिये। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का हवाला देते हुए खरगे ने कहा कि विधानसभा व संसद के चुनाव के बीच में अगर वहां 50 लाख मतदाता बढ़ गये तो यह कैसा चुनाव आयोग है, किस तरह से मतदाता सूचियां बनाई गई हैं ? महाराष्ट्र व हरियाणा चुनाव में धोखाधड़ी की गयी है। अहमदाबाद का अधिवेशन इस मायने में भी महत्वपूर्ण रहा कि इसमें मध्यप्रदेश के 90 से ज्यादा नेताओं ने भागीदारी की। मध्यप्रदेश के कांग्रेस नेताओं को साबरमती के अधिवेशन के बाद यह उम्मीद जागी है कि उन्हें भी अब राष्ट्रीय स्तर पर कुछ अहम् जिम्मेदारियां मिलेंगी।

और यह भी.....!

एक ओर जहां कांग्रेस सहित विपक्षी दल ईवीएम पर आरोप लगा रहे हैं तो वहीं एलन मस्क के बाद अमेरिका की नेशनल इंटेलीजेंस डायरेक्टर तुलसी गबार्ड ने भी कहा कि ईवीएम को आसानी से हैक करके चुनाव नतीजों में हेरफेर की जा सकती है, इसलिए पूरे अमेरिका में बैलेट पेपर लागू करने की जरुरत है ताकि मतदाता चुनाव की वैधता पर भरोसा कर सके। वहीं दूसरी ओर भारत के चुनाव आयोग का दावा है कि अब तक के मतदान में पांच करोड़ से ज्यादा वीवीपेट की पुष्टि हो चुकी है जो ईवीएम के वोटों में मिलान में सही पाई गयी हैं। आयोग का दावा है कि हमारी ईवीएम और दूसरे देशों की ईवीएम में अंतर है और उस अंतर को उन्होंने स्पष्ट भी किया।

धार में तेज बारिश इंदौर में भी पानी गिरा

एमपी के 31 जिलों में आज बारिश का अलर्ट, भोपाल में धूप खिली

भोपाल (नप्र)। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन और टर्फ के एक्टिव होने से मध्यप्रदेश के कई जिलों में ओले-बारिश का दौर जारी है। शनिवार सुबह इंदौर में हल्की बारिश हुई। वहीं, धार के बदनावर समेत आसपास के गांवों में 15 से 20 मिनट तक तेज पानी गिरा। सिंगरौली में शनिवार दोपहर में कई इलाकों में बारिश हुई। सरई, देवसर, चितरंगी और बैढ़न में कहीं तेज तो कहीं हल्की बूंदाबांदी दर्ज की गई।

भोपाल में सुबह बादल छाए रहे। फिर धूप खिल गई। मौसम विभाग ने ग्वालियर समेत 31 जिलों में आज बारिश होने का अनुमान जताया है। वहीं, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला और बालाघाट में ओले गिर सकते हैं। भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, नर्मदापुरम, उज्जैन, रीवा, शहडोल, सागर संभाग के 31 जिलों में तेज आंधी चलने और बारिश होने का अनुमान है।

धार जिले के कई गांवों में बारिश हुई- धार जिले के बदनावर में बादल छाए थे, जबकि शनिवार सुबह 6 बजे से तेज बारिश का दौर शुरू हो गया था। कुछ गांवों में तेज तो कुछ जगह बूंदाबांदी हुई। इंदौर में भी मौसम बदला रहा। कई इलाकों में बूंदाबांदी का दौर जारी रहा। इंदौर में शनिवार सुबह बूंदाबांदी का दौर जारी था

पिछले 24 घंटे में ग्वालियर-उज्जैन समेत 17 जिलों में बारिश- पिछले 24 घंटे में 17 जिलों में हल्की बारिश हुई। इनमें रतलाम, धार, उज्जैन, झाबुआ, भिंड, मुरैना, दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी, रायसेन, नर्मदापुरम, रीवा, मऊगंज, अनूपपुर, शहडोल, सीधी और सिंगरौली शामिल हैं। दूसरी ओर, हवा की रफ्तार भी ज्यादा रही। सिंगरौली में सबसे ज्यादा 71 किमी प्रतिघंटा रफ्तार रही। ग्वालियर में 52किमी,भिंड में 47किमी, उज्जैन में 45किमी, शहडोल में 34किमी, रीवा में 32किमी और अनूपपुर में 25किमी दर्ज की गई।

दिन-रात के पारे में गिरावट- ऐसा ही मौसम 15 अप्रैल तक बना रहेगा। भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के अनुसार, एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन और दो ट्रफ के एक्टिव होने की वजह से प्रदेश में मौसम बदला हुआ है। 15 अप्रैल तक लू का असर नहीं रहेगा।

राजधानी के मंदिरों में मना हनुमान जन्मोत्सव

देर रात तक चलते रहे भंडारे, न्यू मार्केट के खेड़ापति हनुमान मंदिर, जवाहर चौक मनोकामेश्वर मंदिर में हुए विशेष आयोजन

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शनिवार को श्री हनुमान जन्मोत्सव की धूम रही। मंदिरों में विशेष धार्मिक आयोजन हुए और भक्त भक्ति में डूबे। जन्मोत्सव के चलते एक दिन पहले विशेष तैयारियां की गई थी। जबकि शनिवार को दिनभर और देर रात तक भंडारे कार्यक्रम चलते रहा। हनुमान मंदिरों में सुंदर सजावट की गई है। भगवान का विशेष श्रृंगार किया गया है। कई मंदिरों में सुबह 4 बजे से जन्मोत्सव के कार्यक्रम शुरू हो गए थे। अखंड रामायण पाठ और भंडारे का आयोजन भी किया जा रहा था। न्यू मार्केट स्थित श्री खेड़ापति हनुमान मंदिर में प्रकटोत्सव पर आयोजन हुआ। दोपहर 12 बजे महाआरती हुई। इसके बाद भंडारा शुरू हुआ। मंदिर की विशेषता मनोकामना शिला है। जहां भक्त अपनी इच्छाएं लिखते हैं। लगभग 45 वर्ष पुराना यह मंदिर शहर के केंद्र में स्थित है।

जवाहर चौक मनोकामेश्वर हनुमान मंदिर सीतारसोई में हुआ भंडारा

जवाहर चौक स्थित मनोकामेश्वर हनुमान मंदिर में शुक्रवार से हनुमानजन्मोत्सव की तैयारियां हो गई थीं। शनिवार को सुबह से भक्तों का तांता लगा हुआ था। भजन कीर्तिन और रामकथा का आयोजन हुआ। श्रद्धालुजनों ने संकटमोचन की पूजा-अर्चना की। हवन,पूजन और महाआरती हुई। यहां हुई भजन संध्या (आर्केस्टा) ने सभी भक्तों ने भाव विभोर होकर अंजना नंदन के गुणगान गाए। यहां हर साल की तरह इस वर्ष भी सीतारसोई के अंतर्गत विशाल भंडारा हुआ जो देर रात तक जारी था।

350 साल पुराने मरघटिया महावीर मंदिर में भी आयोजन- शाहजहांनाबाद स्थित मरघटिया महावीर मंदिर में आज अखंड रामायण पाठ, मंगल आरती और भंडारे का आयोजन हुए। मान्यता है कि प्रतिमा प्राकृतिक रूप से प्रकट हुई थी।

राम मंदिर खटलापुरा में लाइट शो और भजन संध्या- जहांगीराबाद स्थित श्री राम मंदिर खटलापुरा में शाम 5 बजे से भंडारे और 7 बजे से महाआरती व भजन संध्या का आयोजन हुआ। पांच क्विंटल फूलों से मंदिर को सजाया गया था। वहीं, आकर्षक लाइट शो और आतिशबाजी श्रद्धालुओं को आनंदित कर रही थी।

भोपाल के श्री खेड़ापति हनुमान मंदिर में दिग्विजय सिंह ने की आरती- भोपाल के न्यू मार्केट स्थित श्री खेड़ापति हनुमान मंदिर में दोपहर 12 बजे महाआरती का आयोजन किया गया, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, विधायक भगवानदास सबनानी, पूर्व विधायक पीसी शर्मा, नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी भी शामिल हुए।

भगवान श्रीराम के रामराज्य की स्थापना में हनुमान जी का योगदान सदैव प्रेरणादायी : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्री हनुमान जयंती की सभी श्रद्धालुओं को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि रामदूत श्री हनुमानजी की भक्ति, सेवा और समर्पण भाव से प्रेरित होकर हम विकसित भारत-विकसित मध्यप्रदेश के संकल्प की सिद्धि में योगदान दें , यही प्रार्थना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हनुमान जयंती के पावन पर्व पर राजकीय विमान तल भोपाल स्थित श्री हनुमान मंदिर में दर्शन व पूजा-अर्चना कर जगत के कल्याण की प्रार्थना की। इसके बाद उन्होंने आगामी कार्यक्रमों के लिए प्रस्थान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया के माध्यम से प्रदेशवासियों के लिए जारी संदेश में कहा कि हनुमान जी अजर-अमर हैं। भगवान श्रीराम के रामराज्य की स्थापना में हनुमान जी का योगदान सदैव प्रेरणादायी रहेगा। माता सीता का प्रेम, स्नेह और वात्सल्य पाकर उनकी आजीवन सेवा तथा असाधारण वीरता का हनुमानजी का संकल्प सभी के लिए प्रेरक है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन बाण चला रहे थे, और भगवान श्रीकृष्ण सारथी थे, तब भी धर्म ध्वजा हनुमानजी ने ही धारण की थी। हर कष्ट, हर दुःख में सबसे पहले हमें हनुमानजी ही याद आते हैं।

सिंधिया छत्री में छोटी तोपों की सलामी, रतलाम में 1 लाख 11 हजार 111 बार चालीसा पाठ; उज्जैन में एक क्विंटल नुक्ती का महाभोगन लगा

मध्यप्रदेश में शनिवार को हनुमान जन्मोत्सव मनाया गया। हनुमान मंदिरों में सुंदर सजावट की गई है। भगवान का विशेष श्रृंगार किया गया है। कई मंदिरों में सुबह 4 बजे से जन्मोत्सव के कार्यक्रम शुरू हो गए। अखंड रामायण पाठ और भंडारे का आयोजन भी किया जा रहा है।

शिवपुरी- सिंधिया राजवंश की छत्री में मौजूद हनुमान मंदिर पर 9 छोटी तोपों की सलामी दी गई। मैनेजर अशोक मोहिते ने इन छोटी तोपों को खुद बनाया है।

उज्जैन- उज्जैन के श्री महाकालेश्वर मंदिर में भगवान महाकाल का स्नान के बाद भगवान को वैष्णव तिलक, भांग, चंदन और सिंदूर अर्पित कर हनुमान जी स्वरूप में श्रृंगार किया गया।

इंदौर: रणजीत हनुमान मंदिर को बृजधाम की तरह सजाया गया है। मथुरा और वृंदावन से आए कलाकारों ने रणजीत हनुमान का श्रृंगार किया। साढ़े सात फीट लंबी इलायची की माला भोपाल से तैयार करवाई गई है।

जबलपुर - ब्रिटिश फोर्ट फाउंडेशन इंग्लिश मीडियम स्कूल के बच्चों ने आज हनुमान जयंती पर हनुमान चालीसा का पाठ किया।

रतलाम - हनुमान जयंती पर नेहरू स्टेडियम में सेवावीर परिवार द्वारा 1 लाख 11 हजार 111 बार सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ संतों की मौजूदगी में किया गया। 10 हजार से ज्यादा लोगों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया।

'जल की हर बूंद में जीवन, हर स्रोत में भविष्य का आधार': सीएम डॉ. यादव

जल गंगा संवर्धन अभियान- जल संरचनाओं के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार में जन-भागीदारी का संकल्प

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 'आपः सुजिरा अमृतः सुवर्चाः शंभू मयोभूः', अर्थात जल न केवल अमृतस्वरूप है, बल्कि शुभ, पवित्र और जीवनदायक भी है। उन्होंने कहा है कि जल जीवन जीने का संसाधन मात्र नहीं, अपितु हमारा सनातन संस्कार है। हमारे ग्रंथ कहते हैं कि जल की हर बूंद में जीवन है और हर स्रोत में आने वाले कल का भविष्य छिपा है। इसलिए इस अमूल्य धरोहर की किसी भी मूल्य पर रक्षा करना हमारा दायित्व है।

इसी दायित्व की पूर्ति के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' संचालित किया जा रहा है। इसमें नवीन जल संग्रहण संरचनाओं के साथ-साथ पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल स्त्रोतों और जल वितरण प्रणालियों की साफ सफाई, जल स्त्रोतों के आस-पास पौध रोपण के कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। जन-जागरुकता अभियानों के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इस अभियान में जन-भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है।

छिंदवाड़ा जिले में सक्रिय जनसहयोग- छिंदवाड़ा जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में 30 मार्च से शुरू हुए कार्यों के अंतर्गत कलेक्टर श्री शीलेंद्र सिंह ने जनपद पंचायत जुन्नारदेव पहुंच कर बुधवारा गांव में तालाब के गहरीकरण हेतु ग्रामवासियों के साथ

मिलकर श्रमदान किया। तालाब के जीर्णोद्धार के साथ ही इसमें जमा गाद निकालकर सफाई की जा रही है। इसी के साथ छिंदवाड़ा जिले की जन अभियान परिषद शाखा ने कन्हान नदी तट की सफाई करते हुए जल संरक्षण की शपथ दिलाई।

बुरहानपुर में जल संरक्षण के साथ पर्यावरण संतुलन का प्रयास- जल गंगा संवर्धन अभियान में वन विभाग द्वारा जिले के वन क्षेत्रों में स्थित जल-स्त्रोतों की सफाई, तालाब, बावड़ियों, स्टॉप डेम का गहरीकरण और पौधारोपण का कार्य किया जा रहा है। सोलाबरडी और गढ़ताल रेंज वन क्षेत्रों समेत जिले के 67 चिन्हित जल-स्त्रोतों की सफाई और गहरीकरण का काम किया जा रहा है। वन विभाग का अमला स्थानीय नागरिकों की भागीदारी से नदी, तालाबों, बावड़ियों में जमा कचरा, सूखे पत्ते, गाद और झाड़ियां को हटा रहा है। अमरावती नदी के तटों पर भी वृहद स्तर पर सफाई अभियान जारी है। इससे मानसून के दौरान इन स्त्रोतों में पानी का भराव आसानी से हो सकेगा। जल संरचनाओं में पानी का भराव होने से वन्य जीवों और पक्षियों को भी राहत मिलेगी और भूजल स्तर बना रहने से पर्यावरण भी संतुलित रहेगा।

देवास जिले में नये एवं पुराने जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संकल्पों को साकार करने के उद्देश्य से देवास जिले में भी 'जल गंगा संवर्धन अभियान' 30 मार्च से 30 जून तक चल रहा है। कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह एवं जिला पंचायत के सीईओ श्री हिमांशु प्रजापति के मार्गदर्शन में नये तालाबों का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही पुराने तालाबों, बावड़ियों, नदियों एवं कुँओं का जीर्णोद्धार व पौधारोपण के कार्य जन-भागीदारी से किये जा रहे हैं। जिले की जनपद पंचायत खातेगांव में ग्राम पंचायत बछखाल के बोरदा गांव में तालाब का गहरीकरण किया गया है।

शिवपुरी एवं शहडोल में श्री हनुमान जन्मदिवस पर सामुदायिक श्रमदान

शिवपुरी जिले के विकासखंड शिवपुरी में निवर्तमान नवांकुर संस्था, ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति बूढ़ीबरोद, सेक्टर सुरवाया व ग्राम विकास समिति धुवानी के संयुक्त प्रयास से ग्राम धुवानी तालाब में श्रमदान कर मिट्टी हटाई गई और जल संरक्षण हेतु प्रेरणा दी गई। वहीं, शहडोल जिले में हनुमान जयंती के अवसर पर जिला प्रशासन एवं नगरपालिका के संयुक्त तत्वावधान में प्राचीन विराटेश्वर मंदिर परिसर में स्थित बाणगंगा कुण्ड में सफाई अभियान चलाया गया। विधायक मनीषा सिंह, कलेक्टर डॉ. केदार सिंह एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने इस अभियान में भाग लेते हुए जल संरक्षण की शपथ भी ली।

अभियान का समग्र उद्देश्य

इस अभियान के अंतर्गत नई जल संरचनाओं का निर्माण और पुरानी संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जल स्त्रोतों और जल वितरण प्रणालियों की सफाई के साथ-साथ उनके आस-पास पौधारोपण को प्राथमिकता दी जा रही है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जन-जागरुकता अभियानों के माध्यम से लोगों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा रही है। 'जल गंगा संवर्धन अभियान' का उद्देश्य न केवल जल संरचनाओं के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार में सहायता प्रदान करना है, बल्कि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व वाले जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करते हुए वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों में भारत के स्वर्णिम अतीत से परिचय एवं प्रेरणा का संचार करना भी है। अभियान में मशीन, सामग्री व श्रम का समुचित नियोजन कर आमजन, स्थानीय समुदाय, जनप्रतिनिधि एवं सरकार का संयुक्त प्रयास सुनिश्चित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे इस महत्त्वपूर्ण अभियान में एकजुटता के साथ भाग लेकर जल संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं, क्योंकि 'जल है तो कल है'।

सीजीएसटी ने पकड़ी 1.17 करोड़ की सिगरेट

ई-वे बिल के बिना ही भोपाल से ले जा रहे थे मुंबई

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेल्वे स्टेशन से सेंट्रल जीएसटी की टीम ने शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात करीब दो बजे एक करोड़ रुपए से अधिक की सिगरेट जब्त की है। यह सिगरेट बगैर ई वे बिल के भोपाल से मुंबई भेजी जा रही थी। आरपीएफ के जवानों की मौजूदगी में हुई इस कार्यवाही में सिगरेट भेजने वाली फर्म पर सवा करोड़ रुपए की पेनल्टी लगाई जाएगी। इसके बाद ही सिगरेट को रिलीज किया जा सकेगा। सेंट्रल जीएसटी की टीम कन्साइनमेंट भेजने वाली फर्म को समन जारी करने वाली है।

पचास बैग में भरकर ले जाई जा रही सिगरेट की कीमत 1.17 करोड़ रुपए है। इसे सीज कर लिया गया है। जब्ती की कार्रवाई बगैर ई वे बिल तैयार कराए सिगरेट का परिवहन करने के चलते की गई है।

बैग्स पर लिखा था एडवर्टाइजमेंट मटेरियल का नाम- सेंट्रल जीएसटी के अफसरों के अनुसार जो सिगरेट बैग्स जब्त किए गए हैं उसमें कीमत कम लिखी थी और बैग्स के ऊपर सिगरेट के बजाय एडवर्टाइजमेंट मटेरियल लिखा था, जिसे जब्त किया गया है। इस मामले में भोपाल और मुंबई दोनों ही फर्मों को समन भेजा जाएगा। ई-वे बिल जारी किए बगैर भेजे जा रहे सिगरेट पर कीमत के बराबर की पेनल्टी लगेगी। ऐसे में सवा करोड़ रुपए तक पेनल्टी लगना तय है।

सागर में मीनाक्षी स्टील पर सर्च- इसके पहले सेंट्रल जीएसटी की टीम ने पिछले दिनों सागर में मीनाक्षी स्टील के यहां सर्च की है। यहां डेढ़ करोड़ रुपए तक की टैक्स चोरी सामने आने के संभावना है। जीएसटी के 20 अफसरों की टीम ने मीनाक्षी मेटल इंडस्ट्री में छापेमारी की जहां एंगल बनाए जाते हैं। यहां स्टाक में शार्टेज मिलने और ई-वे बिल में गड़बड़ी के कई मामले पकड़े गए हैं। इसके मालिक निखिल बंसल हैं, जिन्हें समन जारी किया गया है।

बैसाखी पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कणकां दी मुक गई राखी, ओ जट्टा आई बैसाखी

उत्तर भारत में, विशेषतः पंजाब-हरियाणा में गिद्दा और भांगड़ा की धूम के साथ मनाए जाने वाले बैसाखी पर्व के प्रति भले ही काफी जोश देखने को मिलता है लेकिन वास्तव में यह त्यौहार विभिन्न धर्म एवं मौसम के अनुसार देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पश्चिम बंगाल में इसे 'नबा वर्ष' के नाम से मनाया जाता है तो केरल में 'विशू' नाम से तथा असम में यह 'बीहू' के नाम से मनाया जाता है। बंगाल में 'पोइला बैसाखी' भी कहा जाता है और वे इसे अपने नए साल की शुरुआत मानते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हजारों साल पहले इसी दिन मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था।

कृषि प्रधान देश भारत में बैसाखी पर्व का संबंध फसलों के पकने के बाद उसकी कटाई से जोड़कर देखा जाता रहा है। इस पर्व को फसलों के पकने के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता है। वैसे विशेष तौर पर पंजाब का प्रमुख त्यौहार माना जाने वाला यह त्यौहार केवल पंजाब ही नहीं बल्कि देशभर में लगभग सभी स्थानों पर खासतौर से पंजाबी समुदाय द्वारा बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। सिख भाई बैसाखी से ही नए साल की शुरूआत मानते हैं और इसलिए भी एक-दूसरे को बैसाखी की बधाईयां देते हैं। पंजाब देश का प्रमुख अन्न उत्पादक राज्य है, जब यहां किसान अपने खेतों को फसलों से लहलहाते देखता है तो खुशी से झूम उठता है। खुशी के इसी आलम में शुरू होता है गिद्दा और भांगड़ा का मनोहारी दौर। यही वजह है कि विशेष रूप से पंजाब में बैसाखी के पर्व पर गिद्दा और भांगड़ा के मनोहारी कार्यक्रम न हों, यह हो ही नहीं सकता। यहां ढ़ोल-नगाड़ों की धुन पर पारम्परिक पोशाक में युवक-युवतियां नाचते-गाते और जश्न मनाते हैं तथा सभी गुरूद्वारों को फूलों तथा रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया जाता है।

उत्तर भारत में, विशेषतः पंजाब-हरियाणा में गिद्दा और भांगड़ा की धूम के साथ मनाए जाने वाले बैसाखी पर्व के प्रति भले ही काफी जोश देखने को मिलता है लेकिन वास्तव में यह त्यौहार विभिन्न धर्म एवं मौसम के अनुसार देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। पश्चिम बंगाल में इसे 'नबा वर्ष' के नाम से मनाया जाता है तो केरल में 'विशू' नाम से तथा असम में यह 'बीहू' के नाम से मनाया जाता है। बंगाल में 'पोइला बैसाखी' भी कहा जाता है और वे इसे अपने नए साल की शुरुआत मानते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हजारों साल पहले इसी दिन मां गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। इसीलिए इस दिन गंगा आरती करने तथा पवित्र नदियों में स्नान करने की भी परम्परा रही है।

बैसाखी पर्व के साथ भारतीय इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाएं जुड़ी हैं। दरअसल इसी दिन अर्थात् 13 अप्रैल 1699 को सिखों के 10वें तथा अंतिम गुरू गोबिन्द सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में 'खालसा पंथ' की स्थापना की थी। इस पंथ की स्थापना करने का उनका प्रमुख उद्देश्य था लोगों को मुगल शासकों के अत्याचार व शोषण से मुक्ति दिलाना तथा इन अत्याचारों का सामना करते हुए देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा करना। गुरू गोबिन्द सिंह कलम के साथ-साथ तलवार के भी उपासक थे और उनके पंच प्यारों में सभी जातियों के लोग शामिल थे। उन्होंने अन्याय, विरोध एवं पाखंड के सर्वनाश की प्रेरणा और मानव जाति को एकता का संदेश देते रहने में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया था।

बताया जाता है कि लाहौर पर विजय प्राप्त करने के बाद वापस लौटे 'शेरे पंजाब' महाराणा रणजीत सिंह का राजतिलक भी बैसाखी के दिन ही हुआ था। महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब में सिख राज्य की नींव रखी थी और अंग्रेजी शासन की जड़ें खोखली करने के लिए जीवन पर्यन्त कड़ा संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपनी सरकार में विभिन्न सैनिक एवं असैनिक पदों पर सभी धर्मों के लोगों को नियुक्त किया था। कहा जाता है कि अहमद शाह अब्दाली पंजाब को अफगानिस्तान में मिलाना चाहता था तो उसे मुंहतोड़ जवाब देने के लिए बैसाखी के ही दिन 13 अप्रैल 1749 को जनरल जस्सा सिंह अहलूवालिया ने 'खालसा दल' का गठन किया था और सिखों को एक नारा दिया था, ''वाहे गुरू जी दा खालसा, वाहे गुरू जी दी फतेह।'' यह नारा आज 275 वर्षों बाद भी उतना ही प्रासंगिक है और लोगों में एक अद्भुत उत्साह तथा जोश का संचार करता है।

13 अप्रैल 1875 को बैसाखी के ही दिन विश्व प्रसिद्ध संत स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की थी। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' नामक संस्था को आज भी सामाजिक क्रांति का प्रतीक माना जाता है।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भों के अलावा बैसाखी के त्यौहार का देश के स्वतंत्रता संग्राम से भी गहरा संबंध है। 13 अप्रैल 1919 का बैसाखी का दिन आज भी चीख-चीखकर अंग्रेजों के जुल्मों की दास्तान बखान करता है। दरअसल रोलट एक्ट के विरोध में अपनी आवाज उठाने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आव्हान पर इस दिन हजारों लोग जलियांवाला बाग में इकट्ठा हुए थे क्योंकि 'रोलट एक्ट' कानून के तहत न्यायाधीशों और पुलिस को किसी भी भारतीय को बिना कोई कारण बताए और उन पर बिना कोई मुकद्दमा चलाए जेलों में बंद करने का अधिकार दिया गया था। महात्मा गांधी के आव्हान पर भारतवासियों में इस कानून के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश उमड़ पड़ा था। इस काले कानून के विरोध में अमृतसर के जलियांवाला बाग में हजारों लोगों की एक विशाल जनसभा हुई थी लेकिन अंग्रेज सरकार ने बहुत खतरनाक षड्यंत्र रचकर जलियांवाला बाग में एकत्रित हुए लोगों को चारों ओर से घेरकर बिना किसी पूर्व चेतावनी के अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। उस दर्दनाक हत्याकांड में सैंकड़ों भारतवासी शहीद हो गए थे। हालांकि बाद में उस नृशंस हत्याकांड के सूत्रधार जनरल डायर की हत्या कर उसका बदला ले लिया गया था।

बैसाखी को सूर्य वर्ष का प्रथम दिन माना गया है क्योंकि इसी दिन सूर्य अपनी पहली राशि मेष में प्रविष्ट होता है और इसीलिए इस दिन को 'मेष संक्रांति' भी कहा जाता है। यह मान्यता रही है कि सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के साथ ही सूर्य अपनी कक्षा के उच्चतम बिन्दुओं पर पहुंच जाता है और सूर्य के तेज के कारण शीत की अवधि खत्म हो जाती है। इस प्रकार सूर्य के मेष राशि में आने पर पृथ्वी पर नवजीवन का संचार होने लगता है।

बैसाखी पर्व के संबंध में कुछ अंधविश्वास भी प्रचलित हैं। माना जाता है कि यदि बैसाखी के दिन बारिश होती है या आसमान में बिजली चमकती है तो उस साल बहुत अच्छी फसल होती है। इस प्रकार देखा जाए तो बैसाखी का त्यौहार हमारे लिए खुशियों का त्यौहार तो है ही लेकिन इसके साथ-साथ यह दिन हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की कुछ कड़वी यादें भी संजोये हुए है। बैसाखी का पवित्र दिन हमें गुरू गोबिन्द सिंह जैसे महापुरूषों के महान आदर्शों एवं संदेशों को अपनाने तथा उनके पद्चिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित करता है और हमें संदेश भी देता है कि हमें देश में शांति, सद्भावना एवं भाईचारे के नए युग का शुभारंभ करने की दिशा में सार्थक पहल करनी चाहिए।

कविता

क्या दूँ नाम प्रिये

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये
सपने में आती हो तुम
लेकर नव ललाम प्रिये।

बढ़ते गये कदम मेरे
चाहा जिस डगर न जाना
खींच कर लाते गये तुम
हमसफर सफर न जाना
नेह की बरसात में, मैं नहाया
यह कैसा संग्राम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

क्या चाहा था और मुझे
अब क्या-क्या है मिला
साथ तुम्हारा है तो
मुझको किससे क्या गिला
मृगतृष्णा नहीं, सार्थक है
जीवन है अभिराम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

साथ मेरा दोगे कब तक
कौन ज्योतिषी बता पाये
जान पाऊंगा तभी जब
वक्त मुझ पर मुस्कुराये
और चाह पर मेरी भरोसा
कर फूंकोगे प्राण प्रिये
मेरे लिए तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

एक अर्न्तद्वन्द मेरे मन में
फिर भी है कुनमुनाता
क्या गलत है क्या सही,
काश पहले जान पाता
तुम मेरे हो, इसी सोच पर
अब लगा दो विराम प्रिये
मेरे लिये तेरा निश्चल प्यार
क्या दूँ नाम प्रिये।

लघुकथा

आदि-इत्यादि

रामेश्वरम तिवारी

दुनिया के सनातनी और पुरातन कहे जाने वाले देश में विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच रोज-रोज की खटपट और खींचतानी को देख-सुनकर एक दिन आर्यावृत के धर्मी सम्राट ने अपने सभासदों की बैठक बुलाई और उनके समक्ष अपनी चिंता ज़ाहिर की।

गुरु घोटालों ने सम्राट को विशाल स्तर पर एक सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित करने का सलाह दी। जिसमें देश-दुनिया के नामी-गिरामी धर्माचार्यों को आमंत्रित करने और उनके द्वारा फ़साद पर कोई सर्वमान्य समाधान की बात को दोहराया गया।

सम्राट को विचार पसंद आया और उसने अपनी ओर से आयोजन को हरी झंडी दिखा दी। बस! फिर क्या था। देखते ही देखते गुरु घंटालों ने देश की राजधानी में सभा की भव्य तैयारियाँ शुरू कर दीं। नियत दिनांक और समय पर सर्वधर्म सभा की शुरूआत हुई। सभी धर्माचार्यों ने सुबह से लेकर शाम तक अपने-अपने धर्म का बढ़-चढ़कर गुण-गान किया, पर समाज में विभिन्न समुदायों के बीच बढ़ती हुई धर्मांधता को लेकर किसी ने न एक शब्द कहा, न ही चिंता ज़ाहिर की।

सप्ताह भर बाद गुरु घोटालों ने सर्वधर्म सभा पर सम्राट के समक्ष अपना प्रतिवेदन पेश किया जिसे पढ़कर सम्राट ने अपना सिर पीट लिया। चूँकि प्रतिवेदन में वह सब बातें कही गई थी जिसे सम्राट जानते थे। जैसे, धर्म का अर्थ क्या है, जीवन में उसका महत्व और उपादेयता क्या है, आदि-इत्यादि।

कविता

खबाव हो गया हूं मैं

कमलेश कुमार दीवान

तुम्हे जीते हुए उन्ही यादों में खुद एक ख्बाव हो गया हूं मैं
यादों का वजन इतना कि खुद माल असबाब हो गया हूं मैं।
नदी को पार करने में धार लहरों किनारों से भी उलझा हूं
सभी की आश में एक पतवार खुद एक नाव हो गया हूं मैं।
मेरे जेहन में थे मां पिता जी गांव घर गलियां खेत खलिहान
बरसों पहले आया शहर अब खुद एक गांव हो गया हूं मैं।
बहुत धोखा मिला है फिर भी जिंदगी बड़े विश्वास से जी है
यूं उगाई स्वार्थ की फसलें खुद एक दो-आब हो गया हूं मैं।
करें क्या अब भी आती याद जो बीता कल गया 'दीवान'
घर है अपने लोग सब हैं मगर खुद एक घाव हो गया हूं मैं।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

क्रिकेट की पृष्ठभूमि पर एक अच्छा स्पोर्ट्स थ्रिलर

लोकप्रिय खेल क्रिकेट की पृष्ठभूमि पर बुना गया एक अच्छा स्पोर्ट्स थ्रिलर है - 'टेस्ट' । अमेजन प्राइम वीडियो की फेमस वेब सीरीज ' द फैमिली मैन' के लेखक सुमनकुमार की लिखी कहानी पर शशिकांत ने यह स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म बनाई है। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर रिलीज हो गई है। इस फिल्म की सबसे बड़ी खूबी इसकी स्टार कास्ट है- आर माधवन, नयनतारा और सिद्धार्थ । अभिनय की इस त्रिधारा ने इस फिल्म में दर्शकों को आस्वाद के विलक्षण जल? से अभिसिक्त किया है।आर माधवन और विजय सेतुपति को लेकर शानदार तमिल फिल्म - ' विक्रम वेधा ' बनाने वाले निर्माता एस शशिकान्त अब निर्देशन के मैदान में उतरे हैं और? वे इस विधा में अभी तक निपुण भी साबित हुए हैं । माधवन और शशिकान्त के बीच जो भी केमिस्ट्री, फिजिक्स और जियोग्राफी है, वह कमाल की है।

कहानी क्रिकेट के एक ऐसे मैच की है, जिसके बारे में उस समय के दो धुरन्धर खिलाड़ियों को पता चल जाता है कि यह मैच सटोरियों ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके फिक्स कर दिया है और भारत को यह मैच हारना है, लेकिन, इन दोनों ने यह मैच भारत को जिता दिया । यह फिल्म उस मैच की लोकेशन से कुछ ही दूर भारत के चेपक स्टेडियम में चल रहे एक टेस्ट मैच की पृष्ठभूमि में बुनी गई है।

अर्जुन नाम का एक बेहतरीन खिलाड़ी है। टीम मैनेजमेंट उसे रिटायर करने पर तुला है। वह अपना आखिरी मैच शान से जीतना चाहता है। लेकिन, सब कुछ वैसा ही होता, जैसा हम सोचते हैं तो फिर आखिर हमारे जीवन का टेस्ट कैसे होगा ? 'फर्जी ', ' गन्स एण्ड गुलाब 'और? ' फेमिली मैन ' लिखने वाले सुमन कुमार ने फिल्म के निर्देशक एस शशिकान्त के साथ मिलकर क्रिकेट की पृष्ठभूमि में एक अच्छा थ्रिलर लिखा है।

यह कहानी मगर क्रिकेट मेच के फिक्स होने भर की ही कहानी नहीं है ।फिल्म का असली ड्रामा अर्जुन और सरवनन को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में सामने आता है। सरवनन की पत्नी के किरदार में यहां है नयनतारा। उनके चरित्र का नाम कुमुदा है। वह उसी स्कूल में पढ़ाती हैं, जहां अर्जुन का बेटा आदित्य पढ़ता है। कुमुदा के पिता कभी अर्जुन के कोच थे। कुमुदा अपने पहले क्रश अर्जुन को अब भी मानती है। अर्जुन उसे मिलता है तो पहचानता भी नहीं है। आदित्य पर कुमुदा खूब प्यार लुटाती है। और अपना बच्चा पाने की अपने पति सरवनन से लगातार जिद करती है, जिसका स्पर्म काउण्ट अब जाकर नौ महीने के इलाज के बाद ठीक हुआ है। सिनेमा बस इतना ही प्रोग्रेसिव होता रहना चाहिए कि दम्पती को बच्चा न हो रहा तो दोष बस औरत में ही न निकाले। यहां इलाज मर्द का हो रहा है। और, इस मर्द की मर्दानगी की चोट तब लगती है जब उसकी पत्नी उसे आईवीएफ के पाँच लाख रुपये न जुटा पाने के लिए ललकारती है। सरवनन ने पचास लाख रुपये का तो लोन ले रखा है। ये कर्ज देने वाले उसे तलाशते फिर रहे हैं और उसके पास पैसा है नहीं।

नेशनल अवार्ड के हकदार माधवन का अभिनय इस फिल्म में उभरकर सतह पर आया है ।आर. माधवन से पहले श्रीदेवी, जयाप्रदा जैसी पैन इंडियन हीरोइनें तो तमाम हुईं, पैन इंडिया हीरो पहले वह ही हैं। 'अलाई पायुथे' में मणि रत्नम ने उन्हें पहचाना, 'मिन्नाले' में गौतम वासुदेव मेनन ने उन्हें अलग पहचान दी ।बीते तीन दशक से सिनेमा में तरह तरह की भूमिका करते आ रहे माधवन के लिए इस फिल्म में सरवनन की भूमिका एक चुनौती थी जिसे करने के बाद वह खुद भी कई रातों को सो नहीं पाए होंगे। इस फिल्म में उन्होंने अभिनय का एक नया आयाम क्षतय किया है। माधवन को नेशनल अवार्ड दिला सकता है, उनका यह अभिनय। इधर नयनतारा जिनका मूल नाम डायना मरियम कूरियन है । गले में लम्बी माला लटकाए कोई हीरोइन साड़ी में कितनी खूबसूरत दिख सकती है, उसका एक अलग ही पैमाना नयनतारा ने सिनेमा में सेट किया है । नयनतारा का फ्रेम में होना ही सिनेमा की खूबसूरती बढ़ा देता है।

विराॅजसिंह गोहिल इस फिल्म के सिनेमैटोग्राफर है। विराज फिल्मों के नामवर सिनेमैटोग्राफर में गिने जाते हैं ।फोटोग्राफी के शौकीनों को तो यह फिल्म सिर्फ विराज के वाइड एंगल लेंस से बने फ्रेम देखने के लिए ही देखनी चाहिए।

परसाई और शरद जोशी की परंपरा की झलक

पुस्तक समीक्षा

ओम वर्मा
समीक्षक

ब्रजेश कानूनगो आज के दौर के व्यंग्यकारों में एक चर्चित नाम है। जिस दौर में शरद जोशी अपने उरूज पर थे, उस दौर में चुपचाप अपना काम करते हुए जिन चंद व्यंग्यकारों ने अपना ध्यान आकृष्ट किया था, ब्रजेश कानूनगो उन में से एक हैं। उन्हें रायपुर का हरिशंकर परसाई व्यंग्य सम्मान मिलना और मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा अपने बीए के पाठ्यक्रम में उनका व्यंग्य शामिल किया जाना उन्हें एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में मान्यता तो देता ही है, युवा व नए व्यंग्यकारों के लिए एक प्रेरणा-पुंज का कार्य भी करता है। बेशक उन्होंने अन्य कई लेखकों की तरह अपनी शुरुआत 'पत्र, संपादक के नाम' से की थी। इन पत्रों में उनका सशक्त वैचारिक पक्ष झलकता था और बात कहने का वक्र ढंग देखकर लगने लगा था कि यह इंजन 'पत्र, संपादक के नाम' स्तंभ के नैरो गेज के लिए नहीं, बल्कि ब्रॉड गेज के ट्रेक के लिए बना है। और यह हुआ भी। नईदुनिया के अंतिम पत्र कॉलम की शुरुआत कार्टून के साथ उनके व्यंग्यात्मक शैली में लिखे पत्र से ही हुई। इसी पत्र में पहले 'मध्य' नाम से व्यंग्य कॉलम शुरू हुआ। बाद में इसे 'अधबीच' नाम से शुरू किया गया जिसका श्रीगणेश ब्रजेश के व्यंग्य से ही हुआ।

अब बात इस संकलन की। जैसा कि शीर्षक से ज़ाहिर है, इसमें उन्होंने अपने अब तक के रचनाकाल से चुन-चुनकर 48 व्यंग्य रचनाएँ पाठकों के लिए प्रस्तुत की हैं। मैं उनके पहले व्यंग्य से लेकर अब तक की संपूर्ण व्यंगयात्रा से अवगत हूँ व लगभग सभी रचनाएँ मैंने पढ़ी हैं, इसलिए मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि उन्होंने अपने विशाल सृजन-कुंज से सभी रंग के, अलग अलग कालखंड में लिखे व सर्वाधिक सराहे गए व्यंग्य पुष्प का एक खूबसूरत साहित्यिक इकेबाना प्रस्तुत किया है। सभी व्यंग्य रचनाओं पर अगर कुछ कहूँगा तो बात बहुत दूर तलक जाएगी, इसलिए कुछ चुनिंदा रचनाओं पर अपनी बात कहना चाहूँगा।

पहला व्यंग्य है 'सफर में समाधि'। यह कई जगह प्रकाशित हो चुका है और कई गोष्ठियों में पढ़ा और सराहा भी जा चुका है। यह हर व्यक्ति का अनुभव है कि जब मध्यप्रदेश में राज्य परिवहन निगम की बसें चलती थीं तब टिकट कंडक्टर से टिकट लेकर बचे हुए पैसे वापस लेना एक बहुत मुश्किल काम होता था। यही इस व्यंग्य का विषय भी है। पहली नज़र में यह लग सकता है कि अब न तो परिवहन निगम है और न ही बस में टिकटों का चलन। टिकट अब ऑनलाइन या यूपीआई द्वारा किया जाता है जिसमें वास्तविक राशि का भुगतान किया जा सकता है। ऐसे में इस व्यंग्य की प्रासंगिकता क्या है? लेकिन व्यंग्य को ध्यान से पढ़ें तो समझा जा सकता है कि व्यंग्यकार का निशाना कोई कंडक्टर नहीं है, बल्कि वह शक्ति, वह व्यवस्था या वह एजेंसी है जिसे आपसे लिया पैसा लौटाने की कोई चिंता नहीं है और चिंतित वह है जिसका पैसा अन्य पक्ष हड़पकर बैठा है। प्रहार तो भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति या उसके अड्डे पर है। लक्ष्य लंकेश की नाभि पर है।

व्यंग्य 'आदमी और पुतला' भी चिंतन की कई परतें उजागर करता है। जैसे-÷एक पुतला युगों से एक ही दिशा में अपनी उँगली उठाए राह दिखा रहा है। उसे इस बात की चिंता नहीं है कि अब लोग किसी और रास्ते पर चल पड़े हैं...जिन्हें आदमी होना चाहिए वे धीरे धीरे पुतलों में बदलते जा रहे हैं। ऐसे ही तमाम संकलित व्यंगों में से कुछ चुनिंदा पंक्तियाँ यहाँ दे रहा हूँ जिनमें लेखक का चिंतन भी है और व्यंग्य की चुटकी भी है-

÷विकास के लट्टू पर जो ज़ोर हम दे रहे हैं उसकी बहुत सारी ऊर्जा कहाँ लुप्त हो जाती है। जिस रफ्तार से लट्टू घूमना चाहिए क्यों नहीं घूम पाता? (विकास का लट्टू) हिंदी के ताले में अँगरेजी की चाबी ऐसी ही अटकी पड़ी है। न ताला खुल रहा है न चाबी निकल पा रही है। (ताले और चाबियाँ) ÷व्यापम संस्था नहीं, संस्कार है साधुराम जी! जैसे कभी कहा जाता था कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, उसी तरह व्यापम तंत्र की रग-रग में समाविष्ट हो गया है...! (हंगामे का संस्कार)

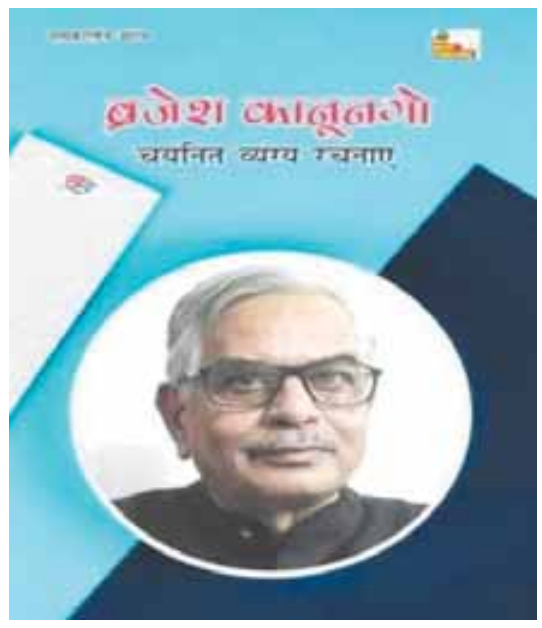

गाँव-कस्बे जिस तरह कांक्रीट के जंगलों में तब्दील होते जा रहे हैं, उस पर व्यंग्य 'बायपास के पास' में प्रहार है। 'लेखक से चुराइटर तक' में चौर्य रचनाकर्मियों की ख़बर ली गई है। 'ऐनक के बहाने' वह व्यंग्य है जिसे मुंबई वि.वि. ने बीए के पाठ्यक्रम में लगाया है। इसमें उनके प्रिय पात्र साधुराम जी के साथ चर्चा के माध्यम से व्यंग्य की शैली में विसंगतियों पर उनका दार्शनिक चिंतन सामने आता है। 'उत्तेजना का कारोबार' में टीवी चैट शो में होने वाले बहस-मुबाहिसों के गिरते स्तर, उसमें होने वाली काँव-काँव व प्रवक्ता की भूमिका पर तंज़ करते हुए वे कहते हैं- सवालों से लबालब टीवी बहस के प्यालों में उत्तरों की एक बूँद भी क्यों नहीं मिलती? एक मात्र यही सवाल हर वक्त मन में घंटी बजाता रहता है। 'सूत्रों के हवाले से' रचना में सनसनी फैलाने वाली अपुष्ट खबरों को सूत्रों का हवाला देकर पेश करने की प्रवृत्ति पर अच्छा व्यंग्य बन पड़ा है।

'वाट्सएप पर महाकवि' शीर्षक व्यंग्य में किसी के भी नाम से किसी की भी रचना घुमाते रहने वाले अति उत्साहियों को बखूबी उजागर किया है। बाज़ारीकरण और आधुनीकीकरण के इस दौर में अँगरेजी किस तरह हिंदी को पदच्युत करने पर तुली है कैसे हमारी अपनी नई पीढ़ी जड़ों से कटती जा रही है, इस चिंता पर 'हिंदी और मेरा आलाप' में चिंतन है। मुहावरों की प्रासंगिकता और उत्पत्ति पर 'और वे घोड़े बेचकर सो गए' एक बढ़िया साहित्यिक व्यंग्य है। 'कुत्ते की समाधि और बारिश में भीगती बकरी' बहुत ही बढ़िया करुण व्यंग्यकथा है। संकलन के अंतिम व्यंग्य 'कोष्ठकों में विचारधारा' में दलों के होते जाते विघटन पर प्रहार है।

संकलन ब्रजेश कानूनगो के अभी तक की संपूर्ण व्यंग्य-यात्रा के सभी आयामों का पूर्ण व सही प्रतिनिधित्व करता है। उनके पास विषयों की विविधता है, नितांत मौलिक चिंतन है और सहज-सरल व संप्रेषणीय भाषा है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि प्रतिनिधि व्यंग्यों के इस संकलन को पढ़कर पाठक के मन में विश्वास पुख्ता होता है कि परसाई-शरद जोशी के बाद व्यंग्य की धारा अभी सूखी नहीं है।

पुस्तक - ब्रजेश कानूनगो की चयनित व्यंग्य रचनाएँ
प्रकाशक - न्यू वर्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली
मूल्य -225 रुपए

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

इलेस्ट्रेशनः भाव, विचार, रेखाओं का समृद्ध संसार

कथा चित्रण में चित्रों के माध्यम से किसी कथा, किसी बात को, किसी संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, लोककथाएँ, सामाजिक संदेश सहित सभी पक्ष शामिल हो सकते हैं। कथा चित्रण आदि से अन्त तक रही है और रहेगी। गुफाओं, मंदिरों, ताड़पत्रों, पाण्डुलिपियों, पारंपरिक कपड़ों या अन्य किसी भी धरातल पर भी इसकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है।

भारत विभिन्न मतों, धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों, संस्कारों के संगम का देश है। जहां सबकी अपनी शैली, बोली, भाषा, लोककला है और विशेष बात ये है कि सभी धरातल के मजबूती के मामले में सशक्त एवं संपन्न है। यहां के सांस्कृतिक विरासत में कथा चित्रण, काव्य, लोककला, लोकनृत्य एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह न केवल कहानी कहने की एक पारंपरिक शैली है, बल्कि समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों को चित्रों, नृत्यों, लोककला के माध्यम से दर्शाने का प्रभावशाली माध्यम भी है। फिलहाल हम चर्चा कर रहे हैं कथाचित्रण की।

कथा चित्रण में चित्रों के माध्यम से किसी कथा, किसी बात को, किसी संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक, लोककथाएँ, सामाजिक संदेश सहित सभी पक्ष शामिल हो सकते हैं। कथा चित्रण आदि से अन्त तक रही है और रहेगी। गुफाओं, मंदिरों, ताड़पत्रों, पाण्डुलिपियों, पारंपरिक कपड़ों या अन्य किसी भी धरातल पर भी इसकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है।

संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है।

कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें हमेशा अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, धार्मिक और आध्यात्मिक समृद्धि भी भारतीय संस्कृति को मजबूती प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, योग, ध्यान और अनेक धार्मिक परंपराओं की जननी है। यह आत्मा और ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज को महत्व देती है। विभिन्न मत, भाषा, भोजन, पहनावा आदि को एक साथ समन्वय के साथ रहने को बल देती है। भारतीय संस्कृति का ही फल है परिवारों का भाईचारा, बड़ों का सम्मान, मेहमानों का सम्मान। हालांकि अभी स्थिति पहले जैसी नहीं रही फिर भी हम भविष्य में अच्छे की उम्मीद तो कर ही सकते हैं।

संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है। कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण, महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। रामायण के प्रसंग जैसे- रामजन्म, सीता स्वयंवर, वनवास, पंचवटी प्रसंग, संजीवनी प्रसंग, रावण वध, मधुबनी, पटचित्र, फड़ चित्रकला सहित सभी विधाओं में

दर्शित है, मंदिरों के दीवारों पर भी रामायण के कथाचित्रण प्राप्त हैं। कथा चित्रण केवल एक पारंपरिक विधा नहीं, बल्कि एक जीवंत कला रूप है। रंगों की जीवंतता, चित्रों की अभिव्यक्ति और भावनाओं की प्रस्तुति इसे एक अद्भुत कला शैली बनाती है। आधुनिक समय में भी यह शैली एनिमेशन, ग्राफिक्स, और चित्र पुस्तकों के माध्यम से पुनः जीवंत हो रही है। लोगों के बीच अपनी जगह बना रही है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार- यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजंता के कृतियों के बारे में सभी कला मर्मज्ञों का मत लगभग एक सा ही है। समृद्धता के मामले में भी अजंता का अपना स्थान रहा है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। मुगल कालीन चित्रावलियों में हम्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नही है, अनवार-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं।

कथा चित्रण भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज को शिक्षित और प्रेरित करने का भी माध्यम है। आज के तकनीकी युग में इसकी प्रासंगिकता बनी हुई है, आवश्यकता है तो बस इसके संरक्षण और संवर्धन की। संस्कृतियों के साथ बढ़ते कथाचित्रण का भविष्य वाकई उज्ज्वल है। बच्चों पर इसका प्रभाव बहुत अधिक होता है। संलग्न कलाकृति पंकज तिवारी की है।

सहकारिता मंत्री अमित शाह का नेतृत्व

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सहकारिता विश्वविद्यालय से बदलेगा देश

भारत में सहकारिता का यह स्वर्णिम काल है। इस समय देश के गृह मंत्री अमित शाह ने स्वयं सहकारिता आन्दोलन की बयार को तेज कर दिया है। देश में आज़ादी के बाद सहकारिता को लेकर किया जा रहा कार्य स्वर्णाक्षरों में अंकित हो रहा है, ऐसा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बात न होगी। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भी पेश कर दिया और सदन ने इस विधेयक को ध्वनिमत से पारित भी कर दिया है। देश में निश्चय ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने की दिशा में गहरी सोच का अभाव था, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता के विकास में अरुचि थी। इससे न तो सामाजिक समावेशिता के लक्ष्य पूर्ण हो पा रहे थे और न ही नवाचार में हमारे युवाओं व वैज्ञानिकों के बीच सोच विकसित हो पा रही थी। भारत में नरेंद्र मोदी सरकार के बाद सहकारिता मंत्रालय की स्थापना एक दूरदर्शी लक्ष्य रहा है। इस मंत्रालय की बागडोर सहकारिता में अभिरुचि रखने वाले नेता अमित शाह ने जब सम्हाली तो उन्होंने कम समय में बहुत कुछ कर दिखाया जिससे आज भारत का आम आदमी लाभान्वित हो रहा है।

वस्तुतः, भारत में सहकारिता में जनमानस की अपनी सहभागिता दिखती रही है। सहकारिता मंत्रालय बन जाने से इस क्षेत्र में फोकस होकर कार्य करने और उपलब्धियों को हासिल करने में बल मिला है। इससे जन सरोकार को बल मिला है और अच्छी बात यह है कि भारत के लोग अपने उद्यम, अपने श्रम और अपनी गरिमा को संयोजित व सुरक्षित करने लगे हैं। लोकसभा में त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भी पेश कर रहे थे सहकारिता मंत्री अमित शाह तो उस समय उन्होंने कहा भी कि सहकारिता एक ऐसा विषय है जो देश में हर परिवार को छूता है। हर गाँव में कोई न कोई ऐसी इकाई है जो सहकारिता के माध्यम से कृषि विकास, ग्रामीण विकास और स्वरोजगार के काम में जुटी हुई है और देश के विकास में योगदान करती है। आजादी के 75 वर्षों बाद आज देश को पहला सहकारिता विश्वविद्यालय मिल रहा है। इस विधेयक के पारित होने के बाद ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता का विकास होगा, सामाजिक समावेशिता बढ़ेगी और नवाचार तथा अनुसंधान में कई नए मानांक स्थापित करने के अवसर भी मिलेंगे। सबसे अहम् बात जो अमित शाह ने कहा वह यह था कि इस प्रकार पूरे देश को सहकारिता की भावना से युक्त और आधुनिक शिक्षा से लैस एक नया सहकारिता नेतृत्व मिलेगा।

भारतीय समाज में सहकारिता की यह अलख जगाने की इच्छाशक्ति निःसंदेह प्रशंसनीय है और अनुकरणीय भी है। भारतीय जनमानस को स्वावलंबन देने व अपने संकल्प से देश को विकास पथ पर आगे ले जाने की दिशा में यह अमित शाह का कार्य है। उनकी इस विश्वविद्यालय को स्थापित करने के पीछे मंशा बहुत पवित्र है, सबसे महत्वपूर्ण यह है। वह इस कोऑपरेटिव क्षेत्र के विकास और विस्तारित करने की कोशिश में हैं। वह चाहते हैं कि प्रशिक्षित मानव संसाधन की जरूरत हमें पड़ेगी, उसकी भरपाई त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी से वह पूरा कर सकें। अमित शाह ने उम्मीद ही नहीं विश्वास व्यक्त किया है कि सहकारी यूनिवर्सिटी बनने के बाद इसके डिप्लोमा और डिग्री धारकों को नौकरी मिलेगी। इस यूनिवर्सिटी से हम डोमेस्टिक के साथ ग्लोबल वैल्यू चैन में भी बड़ा योगदान करेंगे। न्यू एज कोऑपरेटिव कल्चर भी इस यूनिवर्सिटी से शुरु होगा। उनकी चिंता है कि देशभर में हजारों की संख्या में सहकारी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान फैले हुए हैं, मगर इनके कोर्स में कोई मानकीकरण नहीं है, वह चाहते हैं कि

देश में निश्चय ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने के दिशा में गहरी सोच का आभाव था, स्वरोजगार और छोटी उद्यमिता के विकास में अरुचि थी। इससे न तो सामाजिक समावेशिता के लक्ष्य पूर्ण हो पा रहे थे और न ही नवाचार में हमारे युवाओं व वैज्ञानिकों के बीच सोच विकसित हो पा रही थी। भारत में नरेंद्र मोदी सरकार के बाद सहकारिता मंत्रालय की स्थापना एक दूरदर्शी लक्ष्य रहा है। इस मंत्रालय की बागडोर सहकारिता में अभिरुचि रखने वाले नेता अमित शाह ने जब सम्हाली तो उन्होंने कम समय में बहुत कुछ कर दिखाया जिससे आज भारत का आम आदमी लाभान्वित हो रहा है।

इसे हम व्यवस्थित कर सकें। उन्होंने इसीलिए लोक सभा में विधेयक पेश करते हुए अपने ज़वाब में कहा कि हमने यूनिवर्सिटी बनाने से पहले ही कोऑपरेटिव क्षेत्र की जरूरत को ध्यान में रख कर कोर्स डिजाइन का काम शुरू कर दिया है। यूनिवर्सिटी में डिग्री, डिप्लोमा कोर्स भी होंगे और पीएचडी की डिग्री भी दी जाएगी। साथ ही सहकारिता के क्षेत्र में काम कर सभी मौजूदा कर्मचारियों के लिए अल्पावधि का सर्टिफ़िकेट कोर्स भी होगा।

सहकारिता क्षेत्र को समर्पित देश का पहला विश्वविद्यालय आजादी के 75 साल बाद बनेगा और सोचिए कि जब उससे हमारे देश की युवा आबादी प्रशिक्षित होगी तो सहकारिता को बढ़ावा देने वाले लोग, सहकारिता की सोच को आगे बढ़ाने वाले बौद्धिक वर्ग को हम तैयार करेंगे। गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह चाहते हैं कि प्रतिवर्ष लाखों युवा लोग डिप्लोमा, डिग्री या सर्टिफिकेट लेकर सहकारी आंदोलन में सम्मिलित हों। अमित शाह ने कहा भी कि वे 18 वर्ष की आयु से कोऑपरेटिव से जुड़े रहे हैं और इसकी खूबियों और कमियों का अनुभव किया है। मोदी जी एक समृद्ध भारत की नींव डाल रहे हैं और यह विधेयक इसमें मजबूत स्ट्रक्चर प्रदान करेगा। त्रिभुवन दास पटेल जी की सोच थी कि सहकारी क्षेत्र में मुनाफा हर गरीब महिला तक पहुंचे, इसलिए यह यूनिवर्सिटी उनके नाम पर रखने का प्रस्ताव किया गया है। इस विश्वविद्यालय के बनने से निश्चय ही अमित शाह की अपनी सहकारिता सोच व स्वप्न को साकार होते हुए भारत के लोग देखेंगे और उससे लाभान्वित होंगे।

दुनिया में बहु-क्षेत्रीय स्वनिर्भर सहकारिता संगठन आगे आकर कार्य कर रहे हैं। सहकारिता क्षेत्र को बढ़ावा देने वाली शिक्षण व कौशल निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन विश्व भर में किया जा रहा है। इसमें प्रतिभागियों को शामिल किया जा रहा है, व्यापार में नवीनतम तकनीकों के बारे में उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है। ऐसे में, भारत में सहकारिता को बढ़ावा देने वाले त्रिभुवन पटेल के नाम पर विश्वविद्यालय के जरिये भारतीय युवा संसाधन तैयार करने का संकल्प और उसके लिए सद्प्रयास निश्चय ही भारत को बेहतरीन भविष्य प्रदान करने की कोशिश है। जैसा कि केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस विधेयक के माध्यम से सहकारी सिद्धांतों और सहकारी गतिविधियों का विस्तार होगा, कोऑपरेटिव क्षेत्र को नई प्रोघोगिकी का फायदा होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। साथ ही अनुसंधान और नवाचार भी बढ़ेंगे और जमीनी स्तर पर कोऑपरेटिव क्षेत्र मजबूत भी होगा। त्रिभुवन दास जैसे महान व्यक्ति के नाम से जुड़े होने के कारण यह सहकारी यूनिवर्सिटी उच्च कोटि की यूनिवर्सिटी सिद्ध होगी। यह देश में बहुत अच्छे सहकारिता कर्मी देने का काम करेगी। यह उनकी स्वाभाविक इच्छशक्ति और अपनी आत्मशक्ति का प्रतिफल है। निःसंदेह अब त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय से सहकारी क्षेत्र को संगठनों की कार्यक्षमता में सुधार, प्रशिक्षित मानव संसाधनों से पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा। डिजिटल नवाचार के तहत सहकारी प्लेटफार्मों पर अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय मानकों पर सहकारी संस्थानों का निर्माण, और नई फंडिंग योजनाओं के विकास के लिए वित्तीय रणनीतियों का सृजन होगा तो इससे देश ही विकास करेगा।

देश में ऐसे सद्प्रयास की सच में बहुत ज़रूरत थी। अमित शाह ने अपने कम समय में जो प्रतिष्ठित अवदान विश्वविद्यालय के रूप में दिया है, उसका अभिनन्दन किया जाना चाहिए। यह सहकारिता के लिए नए नैरेटिव की स्थापना है। यह उनकी राष्ट्रभक्ति है। यह उनकी जनभक्ति है। यह उनका भारत निर्माण की दिशा में किया जा रहा सद्प्रयास है। त्रिभुवन सहकारी यूनिवर्सिटी विधेयक, 2025 भले ही अभी शुरू रहा हो, लेकिन आने वाले 2047 तक यह विश्वविद्यालय लाखों युवा सहकारी पैरोकारों को तैयार कर चुका होगा, उस समय अमित शाह के आज के प्रयास को लोग नमन करेंगे। भारत में नैसर्गिक रूप से सभी को बहुत कुछ मिला है लेकिन ऐसे नए उपक्रम निःसंदेह व्यक्ति को सबसे भिन्न बनाते हैं। अमित शाह का यह अवदान सहकारिता के क्षेत्र में उनकी विशिष्टता का सर्वोत्तम उदहारण है।

'सहकार से समृद्धि': पीएम मोदी की उल्लेखनीय पहल

भारत में सहकारी आंदोलन

मीनेश शाह

लेखक राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के प्रबंध निदेशक हैं।

भारत सरकार का विश्वास है कि ग्रामीण विकास और राष्ट्र निर्माण में सहकारिताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस दृष्टिकोण के अंतर्गत 'सहकार से समृद्धि' की उल्लेखनीय पहल की है। 2021 में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के कुशल नेतृत्व में स्थापना के बाद से ही सहकारिता मंत्रालय सहकारी क्षेत्र में सरकारी पहलों को आगे बढ़ा रहा है और उसे कार्पोरेट क्षेत्र के समान अवसर मिल रहे हैं। अनेक अन्य पहलों में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय-टीएसयू की स्थापना देश में सहकारी आंदोलन को मजबूत करने की दिशा में अभूतपूर्व कदम है। अनादि काल से डेरी उद्योग परंपरागत पारिवारिक गतिविधि रही है, लेकिन ब्रिटिश शासन में दशकों तक लापरवाही के कारण भारत दूध की कमी वाला और आयात-निर्भर देश बन गया।

स्वतंत्रता के बाद बढ़ती जनसंख्या के कारण दूध की उपलब्धता घटने लगी और देश की आयातों पर निर्भरता और बढ़ गई। 1950 और 1960 के दशक में दूध उत्पादन लगभग 20 मिलियन टन के निकट बना रहा। इस कारण इस कालखंड में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता प्रति दिन 130 ग्राम से घट कर 112 ग्राम रह गई। ऐसी स्थिति में गुजरात के सुदूर शहर आनन्द से उम्मीद की किरण जगी और यह शहर भारत की सहकारी सफलता गाथा का पर्याय तथा भारत की दूध-राजधानी बन गया। इसी स्थान पर 1946 में स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा से सफल सहकारी आंदोलन पैदा हुआ जिसकी परिणति 1946 में अमूल की स्थापना के रूप में सामने आई।

खेड़ा क्षेत्र के किसानों का बिचौलिये व पोल्सन डेरी शोषण करते थे और मनमाने ढंग से मूल्य तय करने के साथ ही अपनी सनक के आधार पर दूध लेना बंद कर देते थे। इस पर डेयरी किसानों ने 'दूध हड़ताल' कर पोल्सन को दूध की सप्लाई बंद कर दी। उन्होंने सहायता के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल से गुहार लगाई जिन्होंने उनको युवा स्वतंत्रता सेनानी श्री त्रिभुवनदास किशीभाई पटेल के निर्देशन में अपनी सहकारी डेरी स्थापित करने की सलाह दी। श्री त्रिभुवनदास पटेल ने आनन्द में ग्रामीण डेरी सहकारितायें बनाने की शुरुआत की और इस प्रकार अमूल का जन्म हुआ। इसमें केवल दो ग्राम डेरी सहकारी सोसाइटी शामिल थीं और लगभग 250 लीटर दूध एकत्र किया जाता था। यह आंदोलन तेजी से फैला तथा और ज्यादा डेरी किसान इसमें शामिल होने लगे। श्री त्रिभुवनदास पटेल डा. वर्गीज़ कुरियन को भी यहां लाए और उनको अमूल के साथ बने रहने को प्रेरित किया। इसके बाद से अमूल ने फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वह आज हर परिवार का अंग बनने के साथ दुनिया का एक सबसे मजबूत 'फूड ब्रांड' बन गया। स्वतंत्रता के पश्चात जहां गुजरात में डेरी उद्योग फल-फूल रहा था, वहीं उसे देश के अन्य भागों में संघर्ष करना पड़ा।

जब तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री यहां आणंद में एक पशु आहार प्लांट का उद्घाटन करने 1964 में आए तो उन्होंने गुजरात में डेरी सहकारिताओं की सफलता पर अध्ययन का प्रस्ताव किया और वे एक रात अजरपुरा गांव में ठहरे। गुजरात में डेरी सहकारिताओं की सफलता से प्रभावित शास्त्री जी ने नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना 1965 में की ताकि अमूल की सफलता पूरे भारत में दुहराई जा सके। 1970 में एनडीडीबी ने आपरेशन फ्लड-ओएफ की शुरुआत की जो दुनिया का सबसे बड़ा डेरी विकास कार्यक्रम था। इसने सहकारिता के आनन्द माडल का अनुसरण किया। ओएफ या 'श्वेत क्रांति' ने गति पकड़ी और उसने शानदार नतीजे दिखाए। ओएफ के बाद एनडीडीबी ने बड़े पैमाने पर डेरी क्षेत्र का विकास किया जिनमें पर्सपेक्टिव प्लान तथा नेशनल डेरी प्लान 1 शामिल थे। इन बड़े डेरी विकास कार्यक्रमों ने अंततः भारत को एक दूध की कमी वाले देश के बजाय दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक बना दिया।

आज भारत अकेले वैश्विक दुग्ध उत्पादन में एक चौथाई का योगदान करता है। इसने डेरी किसानों को उपभोक्ताओं के पैसे का अधिकतम हिस्सा दिलाने में योगदान किया। सहकारितायें आज लाभकारी, उचित तथा पारदर्शी मूल्य निर्धारण के माध्यम से डेरी किसानों को राजस्व का 75-80 प्रतिशत हस्तांतरित करती हैं। डेरी सहकारितायें न केवल सस्ती कीमतों पर उपभोक्ताओं को सुरक्षित और पोषक दूध व दुग्ध उत्पाद उपलब्ध कराती हैं, बल्कि देश भर में डेरी किसानों को आजीविका भी देती हैं।

देश में ओएफ क्रियान्वयन के दौरान एनडीडीबी ने अनुभव किया कि करोड़ों लोगों से संबंध रखने वाले इतने बड़े आकार की परियोजनाओं को जटिल ग्रामीण परिवेशों में कौशल प्रबंधन के लिए ग्रामीण पेशेवरों की जरूरतें होती हैं। इसके परिणामस्वरूप एक संस्थान-इंस्टीट्यूट आफ रूरल मैनेजमेंट आनन्द-इरमा की स्थापना हुई। इसकी स्थापना टिकाऊ परिस्थितिकी, हितैषी और ग्रामीण जनता में समतापूर्ण सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए पेशेवर प्रबंधन विकसित करने के लिए की गई। इरमा की स्थापना 1979 में एनडीडीबी, स्विस एजेंसी फार डेवलपमेंट कोआपरेशन-एसडीसी, भारत सरकार, पूर्व इंडियन डेरी कार्पोरेशन तथा गुजरात सरकार की वित्तीय व तकनीकी सहायता से की गई।

गुजरात सरकार ने इसके लिए जमीन दी। इरमा अब एक प्रमुख संस्थान बन गई है जो सहकारिता और ग्रामीण प्रबंधन के लिए प्रतिबद्ध है। यह बहुत गर्व का विषय है कि इरमा ने अब आनन्द, गुजरात के अपने परिसर में त्रिभुवन सहकारी विश्वविद्यालय-टीएसयू स्थापित कर ऐतिहासिक काम किया है। उचित है कि इस स्थान का चयन भारत के पहले सहकारिता विश्वविद्यालय के लिए किया गया है। इरमा ने टीएसयू की स्थापना के साथ अपनी विरासत का विस्तार किया है। इस विश्वविद्यालय का नाम त्रिभुवनदास पटेल जी के नाम पर रखना उचित है जिन्होंने डेरी क्षेत्र में सहकारी आंदोलन की नींव डाली थी।

इसके बाद से डेरी सहकारिताओं ने देश में किसी कृषि उत्पाद के लिए सर्वाधिक सफल सहकारी माडल का उदाहरण पेश किया है। प्रतिबद्ध सहकारिता विश्वविद्यालय का शानदार विचार सबसे पहले अमित शाह जी को आया था जो सहकारिता के पहले मंत्री हैं।

इस प्रकार भारत के सहकारी आंदोलन में त्रिभुवनदास पटेल के योगदान को स्वीकार करते हुए एक विश्वस्तरीय संस्थान की स्थापना की गई है जो सहकारी क्षेत्र में शोध, नीति निर्माण तथा नेतृत्व विकास में अपना योगदान करेगा। अपने किस्म का यह पहला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध भारत का पहला सहकारी संस्थान है।

टीएसयू ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, स्वरोजगार और लघु उद्यमिता की परिस्थितिकी विकसित करने, सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने तथा खोज एवं शोध में नए मानक स्थापित कर अवसर बढ़ाने का काम करेगा। यह तकनीकी शिक्षा और सहकारी क्षेत्र में प्रबंधन प्रशिक्षण का काम करेगा, सहकारिता शोध एवं विकास को बढ़ावा देगा तथा संस्थानों के नेटवर्क के साथ देश में सहकारी आंदोलन को मजबूत करेगा। टीएसयू का पंजीकरण सोसाइटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के अंतर्गत कॉर्पोरेट बाडी के रूप में किया जाएगा और इसे राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया जाएगा।

इसमें हर साल लगभग 8 लाख छात्रों को शिक्षा देने की क्षमता होगी। भारत सरकार ने अगले पांच साल में देश में 2 लाख बहुद्देशीय पैक्स, डेरी, फिशरी सहकारितायें बनाने का लक्ष्य रखा है जो नाबार्ड, एनडीडीबी व नेशनल फिशरी डेवलपमेंट बोर्ड-एनएफडीबी की सहायता से सभी ग्राम पंचायतों तक सहकारिताओं के माध्यम से पहुंचेंगी। इस व्यापक प्रयास के लिए अन्य संसाधनों के साथ ही बड़ी संख्या में प्रशिक्षित श्रम शक्ति की आवश्यकता होगी। ऐसे में टीएसयू की स्थापना इन प्रयासों में सहयोग करेगी। यह प्रयास सचमुच भारत को 'सहकार से समृद्धि' का दृष्टिकोण जमीन पर उतारने में सहयोग करेगा। इससे भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में भी उल्लेखनीय सहायता मिलेगी।

भगवान पद्मप्रभ का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया

धार। पूर्णिमा महोत्सव के तहत ग्राम आहू में संकट मोचन पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में विशेष पूजा अर्चना की गई। साथ ही भगवान पद्मप्रभ भगवान का ज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया गया। आयोजन में दूर-दूर से भक्त जन शामिल हुए। प्रारंभ में सभी अतिथियों का स्वागत प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष वीरेंद्र

जैन ने किया। कार्यक्रम संबंधी जानकारी प्रबंध कमेटी के कार्याध्यक्ष नवीन गोधा ने मंदिर जी और पुर्नरोद्धार, इतिहास तथा पूर्णिमा महोत्सव की जानकारी दी। मीडिया प्रभारी सुभाष जैन ने बताया कि यहां हर पूर्णिमा पर विशेष पूजा अर्चना होती है। इस दिन हमेशा दूर-दूर से श्रद्धालु अपनी मनोकामना लेकर आते है। आज के विधान के मुख्य पात्र महाराष्ट्र के अहमद नगर के संभाजी बाबूजी जैन थे। शांतिधारा प्रेरित पारस गंगवाल ने व मंडल विधान पर मंगल कलश सुभाष गौतम गंगवाल एवं दीप प्रज्वलन कर मंडल विधान पर विराजमान करने का सौभाग्य मधु श्रेणिक गंगवाल परिवार को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर जैन धर्म के छट्टे तीर्थंकर भगवान पद्मप्रभ भगवान का ज्ञान कल्याणक भी मनाया गया। आभार सुभाष गंगवाल व चन्द्रप्रकाश गंगवाल ने माना।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। सारणी पुलिस ने शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता ने 10 अप्रैल को थाना सारणी में शिकायत दर्ज कराई थी। पीड़िता के अनुसार, कि आरोपी पवन धुर्वे ने शादी का झांसा देकर उसके

साथ कई बार दुष्कर्म किया। इस मामले में थाना सारणी में धारा 69 बीएनएस के तहत अपराध पंजीबद्ध किया। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देश पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी और एसडीओपी सारणी रोशन कुमार जैन के मार्गदर्शन में टीम का गठन किया गया। पुलिस ने संत रविदास कॉलोनी पाथाखेड़ा सारणी निवासी 24 वर्षीय पवन धुर्वे को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। इस मामले में थाना प्रभारी जयपाल इनवाती, उपनिरीक्षक सुनिल गौर, प्रधान आरक्षक विवेक यादव और आरक्षक महेश भलावी व जितेंद्र मोरे की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामुदायिक युवा नेतृत्वकर्ता ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

बैतूल। जनजाति कार्य विभाग मध्य प्रदेश शासन एवं मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम पंचायत पहाड़पुर के शासकीय माध्यमिक शाला में स्कूल चले हम अभियान के तहत हस्ताक्षर अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान का नेतृत्व सामुदायिक युवा नेतृत्वकर्ता सीवायएल तारा

कुशवाहा कंचन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शिक्षकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, समुदाय के सदस्य, एसएमसी सदस्य, अध्यक्ष, सीएससी प्रतिनिधि एवं सक्षम कार्यक्रम से ब्लॉक मैनेजर मीना सातनकर सहित कई लोग उपस्थित रहे। इस दौरान शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए बताया गया कि बच्चों का शिक्षित होना गांव के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। उपस्थित समुदाय के सदस्यों को यह समझाया गया कि बच्चों को नियमित स्कूल भेजना, उनके उज्जवल भविष्य और समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ब्लॉक मैनेजर मीना सातनकर ने सभी से आग्रह किया कि वे अपने गांव के हर बच्चे को नियमित रूप से स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करें और जिन बच्चों ने अभी तक स्कूल में प्रवेश नहीं लिया है, उनका नामांकन अवश्य करवाएं। अंत में सभी उपस्थित लोगों से हस्ताक्षर कर यह शपथ दिलवाई गई कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे और समुदाय के अन्य सदस्यों को भी इसके लिए जागरूक करेंगे।

धूमधाम से मनाया गया हनुमान दद्दा का जन्मोत्सव, निकली शोभायात्रा

मंदिरों में सुबह से लगी रही भक्तों की भीड़, सुंदरकांड-रामायण पाठ का हुआ आयोजन

बैतूल। जय-जय श्रीराम और जय-जय हनुमान के जयकारों से शहर के हनुमान मंदिर गुंजायमान हो उठे। हनुमान जयंती पर शहर के मंदिरों में सुबह से ही पूजा-अर्चना का दौर जारी रहा। देर शाम शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा का जगह-जगह फूलों से स्वागत किया गया। हनुमान जयंती को लेकर श्रद्धालुओं ने पहले से तैयारियां कर रखी थी। मंदिरों को आकर्षक रूप में सजाया था। वहीं हनुमान जयंती के एक दिन पूर्व सुंदरकांड और रामायण पाठ का आयोजन किया गया। भक्तों के द्वारा हनुमान दद्दा को चोला भी चढ़ाया गया। टिकारी स्थित हनुमान दद्दा के मंदिर में विशेष आयोजन किया गया। जिसमें सुबह भक्तों के द्वारा हवन पूजन के साथ आरती की गई और यहां पर प्रसादी वितरण भी की गई। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने पहुंचकर प्रसादी ग्रहण की। गौरतलब है कि टिकारी के हनुमान दद्दा अर्जी वाले हनुमान दद्दा के रूप में जाने जाते हैं और यहां पर स्थानीय भक्तों के अलावा बाहर के भी भक्त आते हैं। सरकारी कार्यालयों में स्थित मंदिरों में भी दिन भर धार्मिक आयोजन होते रहे। इसके अलावा जिले भर के मंदिरों को आकर्षक साज सज्जा कर सजाया गया था वहीं कहीं श्रीरामचरित मानस, तो कहीं सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन भी किया गया। वहीं श्री हनुमान जन्मोत्सव समिति गंज बैतूल द्वारा शाम को श्री हनुमान चौक (तांगा स्टैंड) गंज बैतूल से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। यहां श्री हनुमान की भव्य महाआरती भी आयोजित की गई।

भक्ति से सराबोर नजर आए भक्त- हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर पूरे जिले में धार्मिक उत्साह और आस्था का अद्भुत नजारा देखने को मिला। भक्ति भाव से सराबोर श्रद्धालुओं ने सुबह से ही मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना की। हनुमान जी के दर्शन के लिए मंदिरों में भक्तों की लंबी कतारें लगी रहीं। मंदिरों को आकर्षक ढंग से फूलों और रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया गया था। कई जगहों पर विशेष हवन और पूजन का आयोजन हुआ, जिसमें भक्तों ने बढ़-चढकर भाग लिया। मोती वार्ड स्थित श्री हनुमान मंदिर में सुबह से पूजा अर्चना के साथ भक्तों को प्रसादी वितरित की गई। टैगोर वार्ड पुलिस लाइन स्थित श्री हनुमान माता मंदिर में भी अखण्ड रामायण पाठ का आयोजन किया गया था, जिसका समापन शनिवार सुबह किया गया। दोपहर में हवन पूजन के पश्चात भंडारा प्रसादी वितरित की गई।

हवन पूजन कर बांटी प्रसादी

भगवान श्रीराम के परम भक्त हनुमान जी की विशेष आरती के बाद प्रसादी वितरण का भी आयोजन किया गया। कुछ मंदिरों में विशाल भंडारा हुआ, जहाँ हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने पूरे उत्साह के साथ हनुमान जन्मोत्सव मनाया। जय बजरंग बली के जयघोषों से वातावरण गूंज उठा। यह पर्व ना केवल आस्था का प्रतीक रहा, बल्कि सामाजिक एकता और सौहार्द का संदेश भी देता नजर आया। कोसमी स्थित टर्बो टायर एण्ड ट्यूब इंडस्ट्रीज में स्थित हनुमान मंदिर में भी सुबह से ही पूजा अर्चना और हवन पूजन किया गया। पूरे विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की गई और शाम को भंडारा प्रसादी का कार्य किया जाएगा। इसके अलावा हनुमान डोल, केरपानी, पोस्ट आफिस, जिला पंचायत, जिला उद्योग कार्यालय, न्यायालय परिसर, अस्पताल परिसर, सिंधी कालोनी सहित अन्य हनुमान मंदिरों में जन्मोत्सव पर धूम मची रही।

केसरीनंदन हनुमान मंदिर में हुआ भंडारा

हनुमान जयंती पर केसरीनंदन हनुमान मंदिर बड़ा नीम इटारसी रोड पर भंडारा दोपहर 3 बजे से और महाआरती का आयोजन शाम 7 बजे से हुआ। इस कार्यक्रम में बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, पूर्व नपाध्यक्ष आनंद प्रजापति, पूर्व पार्षद गीतेश बारस्कर, प्रकाश धोटे, राजा वाग्द्रे, संजु साहू, बवन पवार, कृष्णा वाग्द्रे, सुनील सोनी, अरुण चढ़ोकार, मंगलमूर्ति बराठे, मदन कुरावले, वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी सहित समिति के सभी सदस्य उपस्थित थे।

मंदिरों में की पूजा-अर्चना

चैत्र मास पर माता मंदिरों में भी पूजा-अर्चना के लिए महिलाओं की भीड़ लगी रही। महिलाओं ने माता माई के दरबार में पूजा-अर्चना कर चैत्र मनाया। मान्यताओं के अनुसार महिलाओं ने आटे के दीपक, श्रृंगार और श्रीफल चढ़ाकर चैत्र मनाया। माता मंदिरों में सुबह से ही महिलाओं की भीड़ लगी रही। जल चढ़ाने और पूजा-आराधना करने के लिए महिलाएं मंदिर पहुंची। इधर हनुमान मंदिरों में भी जल चढ़ाने और पूजा-अर्चना करने के लिए लोग सुबह से ही पहुंच रहे थे। शहर के मंदिरों में सुबह से ही शुरू हुए पूजा-अर्चना के क्रम के कारण समूचा शहर भक्तिमय नजर आया।

शिवलिंग स्थापना में पहुंचे विधायक खंडेलवाल ने दिए 5 लाख, बनाएंगे मंदिर

बैतूल। ग्राम पंचायत कढ़ाई अंतर्गत सोनाघाटी में क्रांतिवीर शमशेर सिंह भोसले नगर में शिवलिंग स्थापना कार्यक्रम में पहुंचे स्थानीय विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मंदिर निर्माण के लिए विधायक निधि से 5 लाख देने की घोषणा की। साथ ही विधायक श्री खंडेलवाल ने इस नगर के रहवासियों को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए आगामी एक सप्ताह के भीतर सरकारी सभी विभागों की कैंप लगाकर शासकीय योजनाओं का लाभ देने हर तरह से मदद करने की आश्वासन भी दिया। इसके अलावा इस नगर के बच्चों की पढ़ाई के लिए आंगन बाड़ी केंद्र खोलेंगे और बड़े बच्चों को आई टी आई भारत भारती में दाखिला कराएंगे जिससे यहां के बच्चे टेक्निकल की पढ़ाई कर के आत्मनिर्भर हो सकेंगे। विधायक श्री खंडेलवाल ने इस नगर में अन्य मूलभूत सुविधाएं भी जैसे सड़क बिजली पानी की व्यवस्था कराने का आश्वासन भी दिया जिसे नगरवासियों ने स्वागत किया और खुशी जाहिर की। विधायक श्री खंडेलवाल इस नगर में रात्रि 7:30 से 8:30 बजे तक रुके रहे और वह इन लोगों की विभिन्न समस्याओं से रूबरू हुए और उनका जायजा भी लिया । इसके बाद रात्रि करीब 11:00 बजे केंद्रीय राज्य मंत्री डीडी उईके भी पहुंचे और वे लगभग एक से डेढ़ घंटे तक रुके रहे । मंत्री श्री उईके ने भी हर तरह से मदद करने के आश्वासन दिया है।

इन अतिथियों के मौजूदगी में हुआ कार्यक्रम- बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के अलावा हिंदी भाषा सलाहकार भारत सरकार प्रवीण गुगनानी, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, विक्रांत कुमरे अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट एवं राज्यपाल सलाहकार भोपाल, प्रकाश उईके पूर्व न्यायाधीश सलाहकार राष्ट्रीय जनजाति नई दिल्ली, घनश्याम मास्कुले लोकायुक्त टीआई भोपाल, सुभाष बरोल क्षेत्र संगठन मंत्री, प्रवीण ढोलके बनवासी अखिल भारतीय कल्याण आश्रम अधिकारी आदि मौजूद थे।

मंत्री डीडी उईके और विधायक खंडेलवाल का हुआ गर्मजोशी से स्वागत- क्रांतिवीर शमशेर सिंह नगर में शिवलिंग स्थापना कार्यक्रम में रात्रि 11बजे पहुंचे बैतूल हरदा सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके का ढोल बाजे के साथ स्वागत सम्मान किया गया। हालांकि इसके पहले रात्रि 7:30 बजे पहुंचे बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल का भी नगरवासियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

आंगनबाड़ी केंद्र आईटीआई में मनाया पोषण पखवाड़ा

बैतूल। आंगनवाड़ी केंद्र आईटीआई सदर बैतूल में स्थित सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों द्वारा 8 से 22 अप्रैल तक पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत शुक्रवार 11 अप्रैल को आंगनबाड़ी केन्द्र में समुदाय आधारित पोषण प्रबंधन मॉड्यूल के माध्यम से कुपोषण का प्रबंधन, जिसमें बच्चों के पोषण स्तर की नियमित निगरानी करना, पोषण स्तर के संबंध में परिवार को जागरूक करना, चिन्हित कुपोषित बच्चों की सीएमएएम (समुदाय आधारित पोषण प्रबंधन) कार्यक्रम में पंजीयन एवं पोषण प्रबंधन करना बताया गया। इसके अलावा 10 दिवसीय शारीरिक माप दिवस का आयोजन कर दिवस के लिए निर्धारित बच्चों का वजन एवं लंबाई, ऊंचाई मान कर पोषण ट्रैकर ऐप में दर्ज करना आदि कार्यों की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान बताया कि गर्भावस्था के दौरान पौष्टिक आहार, समय-समय पर स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण और स्तनपान की भूमिका बेहद अहम होती है। खासकर नवजात शिशु को जन्म के बाद छह माह तक केवल मां का दूध ही देना चाहिए। यह बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है।

बेकाबू होकर पलटी कार, हादसे में आरक्षक की मौत

बैतूल। शाहपुर स्थित भौंरा चौकी में पदस्थ आरक्षक की देर रात सडक़ दुर्घटना में मौत हो गई। वह वारंट तामील करने के बाद भौंरा लौट रहे थे, तभी रामपुरमाल वन विभाग के डिपो के पास उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। शाहपुर थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर ने बताया कि आरक्षक करण सिंह ठाकुर (30) इटारसी की तरफ से लौट रहे थे। रात में मोड़ पर कार बेकाबू होकर सडक़ से उतर गई और पलट गई। पेड़ से टकराने के कारण सिपाही गेट से बाहर गिर गए, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी सुबह किसी राहगीर ने डायल 100 को दी। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की और मृतक की पहचान उनके जेब से मिले आधार कार्ड से की। नर्मदापुरम जिले के होशंगाबाद निवासी करण ठाकुर के शव को पोस्टमार्टम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर ले जाया गया है। अपर पुलिस अधीक्षक कमला जोशी मौके पर पहुंचकर मामले की जांच कर रही हैं। एएसपी कमला जोशी भी शाहपुर में है, उन्होंने विभाग की ओर से परिजनों को एक लाख रुपये की परोपकार राशि दी है।

महिलाओं को पोषण पखवाड़े की थीम पर दी जानकारी

आंगनवाड़ी केंद्र झाड़ेगांव 2 में महिलाओं को बताया पोषण का महत्व

बैतूल। बाल विकास परियोजना बैतूल ग्रामीण के अंतर्गत आने वाले सेक्टर बैतूल-2 के ग्राम झाड़ेगांव में आंगनवाड़ी केंद्र झाड़ेगांव-2 में शुक्रवार को वीएचएनडी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती नीतू मालेवार, एएनएम वंदना मर्सकोले और आशा कार्यकर्ता श्रीमती सुखवंती मरकाम की उपस्थिति में पोषण संबंधी विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी महिलाओं को भारत सरकार द्वारा वर्ष 2025 में मनाए जा रहे सातवें पोषण पखवाड़े के बारे में जानकारी दी गई। यह पखवाड़ा 8 अप्रैल 2025 से 22 अप्रैल 2025 तक पूरे देश में मनाया जा रहा है। कार्यकर्ताओं द्वारा इस वर्ष की

थीम से जुड़ी जानकारी भी दी गई और 10 दिवसीय शारीरिक माप दिवस के उद्देश्य तथा प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया। कार्यकर्ता श्रीमती नीतू मालेवार ने अपने मोबाइल में केयर प्रोफाइल के माध्यम से बच्चों के विगत तीन माह के पोषण स्तर का ग्राफ दिखाते हुए महिलाओं को समझाइस दी कि किस प्रकार से बच्चों के पोषण स्तर पर नियमित निगरानी रखी जा सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि सही पोषण के लिए क्या-क्या जरूरी है और किस तरह से माता-पिता बच्चों की सेहत को बेहतर बना सकते हैं। एएनएम वंदना मर्सकोले और आशा कार्यकर्ता श्रीमती सुखवंती मरकाम ने भी उपस्थित महिलाओं से संवाद करते हुए उन्हें स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण और पोषण आहार की नियमितता के लाभ बताए। वीएचएनडी के माध्यम से ग्राम झाड़ेगांव में महिलाओं को पोषण के प्रति सजग करने का प्रयास किया गया, ताकि आने वाली पीढ़ी स्वस्थ और मजबूत बन सके।

अष्टम महापुराण अग्नि महापुराण के रूप में आज से आरंभ

धार। त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर 18 महापुराण समिति के तत्वाधान में आयोजित होने वाली अष्टम महापुराण हनुमान जन्मोत्सव के की पावन बेला में प्रारंभ हुई । श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर 18 महापुराण का आयोजन समिति के द्वारा करवाया जा रहा है । वर्ष में दो बार दो महा पुराणों का वाचन होता है इस बार श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर यह अष्टम महापुराण अग्नि महापुराण के रूप में आज से आरंभ हुई।

महापुराण आरंभ के पूर्व सांवरिया सेठ मंदिर प्रांगण स्थित इच्छापूर्ण त्रिवेणी हनुमान मंदिर धार में श्री हनुमान जी महाराज का जन्मोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इच्छापूर्ण त्रिवेणी हनुमान जी का आकर्षक श्रृंगार किया गया। सुबह 6 बजे हनुमान जी की आरती, हनुमान चालीसा, राम रक्षा स्तोत्र एवं राम स्तुति के साथ महापुराण का आरंभ किया गया । प्रातः 9 बजे श्री सांवरिया सेठ मंदिर से भव्य कलश यात्रा आरंभ हुई । कलश यात्रा में महापुराण झकलाय जिला नर्मदापुरम के प्रसिद्ध कथावाचक पंडित रमाकांत जी व्यास रथ पर सवार थे तथा नगर की माता बहने सर पर कलश धारण किए तथा पुरुष वर्ग पीले वस्त्र धारण कर जुलूस की शोभा बढ़ा रहे थे । शोभायात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया।

शोभा यात्रा में सांवरिया सेठ मंदिर एवं 18 महापुराण समिति के अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी कोषाध्यक्ष दशरथ सिग्घा ,रितेश शर्मा अश्विन चौहान, महेश शर्मा, देवेंद्र मांडलिक, जगदीश जी जोशी, गोपाल दास गुप्ता, ओमप्रकाश सोलंकी ,गौरव गुप्ता ,प्रताप सिंह रघुवंशी अधिवक्ता ,सुनील रघुवंशी अधिवक्ता ,दीपक जोशी गजेंद्र सिंह चौहान ,जेपी सिंह ,सत्यनारायण शर्मा राजेंद्र प्रसाद शर्मा, चंद्रकला शर्मा , सोनिया जोशी, गरिमा गुप्ता, माया शर्मा, उमा अग्रवाल, स्मिता मंडलोई , सुंदर उपाध्याय , विजयारानी सोलंकी शीला हारने , राधा सिग्गा त्रिमूर्ति नगर के गणमान्य नागरिक शोभायात्रा में शामिल हुए। पूज्य गुरुदेव पंडित रमाकांत व्यास का जगह-जगह स्वागत किया गया ।18 महापुराण समिति अध्यक्ष स्वयं प्रकाश सोनी ने बताया कि आज प्रारंभ हुई अग्नि पुराण में व्यास पीठ पर विराजित पंडित रमाकांत व्यास ने अग्नि पुराण के महत्व को बताते हुए कहा कि अग्नि पुराण हिंदू धर्म के 18 प्रमुख पुराणों में से एक है, । यह पुराण अग्नि देवता द्वारा महर्षि वशिष्ठ को बताया गया था।

अग्नि पुराण के प्रथम दिवस में

अग्नि पुराण में सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय की प्रक्रिया का वर्णन है। धर्म और अध्यात्म के इस पुराण में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के बारे में बताया गया। अग्नि पुराण में विभिन्न देवताओं और ऋषियों की कथाएं हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। अग्नि पुराण एक महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ है, जिसमें विभिन्न विषयों पर जानकारी दी गई है। इसकी कथाएं और शिक्षाएं जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं और आध्यात्मिक विकास में मदद करती है। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डा.अशोक शास्त्री ने बताया कि कथा समापन पश्चात महाआरती प्रसाद वितरण, संध्या हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष में सुंदरकांड पाठ का आयोजन पंडित श्याम सुंदर दुबे के सानिध्य में हुआ जिसमें नगर के विभिन्न गणमान्य लोगों के साथ-साथ त्रिमूर्ति कॉलोनी के गणमान्य उपस्थित थे।

'डीडीएलजे' के 30 साल

लंदन में लगेगी शाहरुख और काजोल की मूर्तियां

हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस ने घोषणा की है कि लंदन के लीसेस्टर स्क्वायर में स्थित रोमांचक 'सीन्स इन द स्क्वायर' मूवी ट्रेल में एक नई मूर्ति शामिल होने जा रही है। ब्रिटेन के लीसेस्टर स्क्वायर पर बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान और अभिनेत्री काजोल की कांस्य की एक मूर्ति लगाई जाएगी। इसमें उन्हें 1995 में प्रदर्शित सुपरहिट फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' की उनकी लोकप्रिय मुद्रा में दिखाया जाएगा।

स 20 अक्टूबर 2025 को 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' की रिलीज होने के 30 साल पूरे हो जाएंगे और फिल्म में शाहरुख-काजोल की लोकप्रिय मुद्रा वाली मूर्ति का अनावरण इससे काफी पहले (साल के मध्य तक) कर दिया जाएगा। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का निर्माण दिवंगत फिल्मकार यश चोपड़ा ने अपने बैनर यशराज फिल्म्स के तले किया था। इस फिल्म के जरिए उनके बेटे आदित्य चोपड़ा ने निर्देशन की दुनिया में कदम रखा था! 'हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस' ने बताया कि शाहरुख-काजोल की कांस्य मूर्ति लीसेस्टर स्क्वायर पर स्थापित 'सीन्स इन द स्क्वायर' में लगाई जाएगी, जहां विभिन्न फिल्मों की लोकप्रिय मुद्राओं को प्रदर्शित करने वाली कई मूर्तियां पहले से मौजूद हैं। संस्थान ने एक बयान में बताया कि यह मूर्ति लीसेस्टर स्क्वायर पर लगाई जाने वाली किसी भारतीय फिल्म से जुड़ी पहली मूर्ति होगी।

यह फिल्म ब्रिटेन के 5 मिलियन से अधिक दक्षिण एशियाई समुदाय द्वारा कितनी पसंद की जाती है। डीडीएलजे भारत और दुनियाभर के दक्षिण एशियाई लोगों के लिए पॉप संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। यह फ़िल्म दो अप्रवासी भारतीयों, राज और सिमरन की प्रेम कहानी है, जो यूरोप से भारत तक फैली है। इसकी शुरुआत किंग्स क्रॉस स्टेशन से एक ट्रेन यात्रा से होती है। यह स्थान और भी उपयुक्त है क्योंकि लीसेस्टर स्क्वायर 'डीडीएलजे' के उस दृश्य में दिखता है, जब राज और सिमरन पहली बार एक-दूसरे से टकराते हैं। हालांकि, वे एक-दूसरे को नहीं पहचानते और फिर यूरोप की यात्रा शुरू होती है।

हार्ट ऑफ लंदन बिजनेस एलायंस ने घोषणा की, कि एक नई मूर्ति लंदन के लीसेस्टर स्क्वायर में स्थित रोमांचक 'सीन्स इन द स्क्वायर' मूवी ट्रेल में शामिल होने जा रही है, और यह सम्मान यशराज फिल्म्स की ऐतिहासिक ब्लॉकबस्टर दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (डीडीएलजे) को मिला। यह लीसेस्टर स्क्वायर, लंदन में स्थापित होने वाली पहली भारतीय फिल्म की मूर्ति होगी! यह घोषणा डीडीएलजे के

30 वर्ष पूरे होने के जश्न की शुरुआत का प्रतीक भी होगी।

यह कांस्य प्रतिमा बॉलीवुड के दो सुपरस्टार्स शाहरुख खान और काजोल को डीडीएलजे के एक प्रतिष्ठित पोज में प्रदर्शित करेगी। इस साल वसंत ऋतु में इसका अनावरण होना तय है। यह घोषणा इस बात का प्रमाण है कि यह फिल्म ब्रिटेन के पांच मिलियन से अधिक दक्षिण एशियाई समुदाय द्वारा कितनी

पसंद की जाती है। डीडीएलजे भारत और दुनिया भर के दक्षिण एशियाई लोगों के लिए पॉप संस्कृति का एक अहम हिस्सा है.

दो अप्रवासी भारतीयों राज और सिमरन की प्रेम कहानी है, जो यूरोप और भारत में फैली है और जिसकी शुरुआत किंग्स क्रॉस स्टेशन से एक ट्रेन यात्रा से होती है। यह स्थान उपयुक्त है, क्योंकि लीसेस्टर स्क्वायर 'डीडीएलजे' के उस दृश्य में दिखता है, जब राज और सिमरन पहली बार एक-दूसरे से टकराते हैं। हालांकि वे एक-दूसरे को नहीं पहचानते और फिर यूरोप की यात्रा शुरू होती है। उस दृश्य में लीसेस्टर स्क्वायर के दो प्रमुख सिनेमाघर प्रमुखता से दिखाए गए हैं राज वुए सिनेमा के सामने खड़ा होता है और सिमरन ओडियन लीसेस्टर स्क्वायर के पास से गुजरती है। नई प्रतिमा ओडियन सिनेमा के बाहर, पूर्वी टेरेस पर स्थापित की जाएगी और उस दृश्य को श्रद्धांजलि देगी। फिल्म में लंदन के अन्य स्थान जैसे हॉर्स गॉर्ड्स एवेन्यू, हाइड पार्क, टॉवर ब्रिज और किंग्स क्रॉस स्टेशन भी शामिल हैं।

इस फिल्म ने भारतीय सिनेमा पर गहरा प्रभाव डाला और यह एक ऐसा वैश्विक घटना बन गई कि अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी भारत की आधिकारिक यात्रा के दौरान इसका उल्लेख किया था। यूके में इस फिल्म का सांस्कृतिक महत्व आज भी बरकरार है। इस पर आधारित एक नया म्यूज़िकल कम फॉल इन लव द डीडीएलजे म्यूजिकल 29 मई 2025 को मैनचेस्टर ओपेरा हाउस में शुरू होने जा रहा है। सोशल मीडिया पर 140 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स के साथ, फिल्म के प्रमुख अभिनेता शाहरुख खान हमारे समय के सबसे पसंदीदा कलाकारों में से एक हैं।

डेब्यू को तैयार अजय देवगन की बिटिया

अ जय देवगन और एक्ट्रेस काजोल की बेटी न्यासा देवगन को लेकर लंबे समय से चर्चा है कि वे फिल्मों में कब कदम रखेंगी। सोशल मीडिया पर उनकी मौजूदगी और स्टाइल ने उन्हें पहले ही काफी पॉपुलर बना दिया है। ऐसे में बेसब्री से इंतजार हो रहा है, कि न्यासा कब बड़े पर्दे पर नजर आएगी। जिस पर अब खुद उनकी मां काजोल ने जवाब दिया।

हाल ही में एक इंटरव्यू में जब काजोल से न्यासा के बॉलीवुड डेब्यू को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि न्यासा ने अब तक तय कर

लिया है, कि वह अभी फिल्मों में नहीं आना चाहती. मैं उस पर कोई दबाव नहीं डालना चाहती। काजोल के इस बयान के बाद ये साफ हो गया है, कि फिलहाल न्यासा का बॉलीवुड डेब्यू होने वाला नहीं है।

हालांकि, फैंस को उम्मीद है कि शायद भविष्य में न्यासा अपना मन बदलें और इंडस्ट्री में कदम रखें। काजोल के वर्कफ्रंट की बात करें, तो बातचीत के दौरान काजोल ने अपनी आने वाली फिल्म 'मां' के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि फिल्म 27 जून 2025 को रिलीज होगी। इसके जरिए काजोल एक बार फिर दमदार रोल में नजर आएंगी।

रियल बॉक्स

देश भक्ति के साथ मसाला मनोज कुमार की पहचान

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

म नोज कुमार के न रहने को आज के दौर से ज्यादा 90 के दशक से पहले के दर्शकों ने गंभीरता से महसूस किया। उस दौर के सिनेमा में जिन अभिनेताओं को पसंद किया जाता रहा, उनमें मनोज कुमार भी एक थे। वे सिर्फ अभिनय ही नहीं करते रहे, उन्होंने फ़िल्में बनाने का जोखिम भी मोल लिया, जो आज के मुकाबले उस समय ज्यादा मुश्किल था। उन्होंने ऐसे विषयों का चुनाव किया, जो लीक से हटकर कहे जा सकते हैं। इन्हीं में एक देशभक्ति और सामाजिक समस्याएं था। उनकी फिल्मों के देशभक्ति वाले कथानक की वजह से मनोज कुमार के नाम के साथ 'भारत कुमार' ऐसे चस्पा हो गया कि उन्हें इसी नाम से पुकारा जाने लगा। 'उपकार' से उन्होंने फिल्म निर्माण में कदम रखा और सामाजिक विषयों को ऐसी पहचान बना लिया कि दर्शक उनसे ऐसी ही फिल्मों की अपेक्षा करने लगे। अपने आधे चेहरे को हाथ की उंगलियों से ढकने की उनकी स्टाइल उनकी पहचान जैसी बन गई थी।

उनकी यादगार फिल्मों में 'शहीद' (1965) शामिल है, जो भगत सिंह के जीवन पर बनी थी। पूरब और पश्चिम (1970) की कहानी सांस्कृतिक पहचान पर बनाई गई, रोटी कपड़ा और मकान (1974) जीवन की जरूरतों और सामाजिक मुद्दों को कुरेदती थी और 'क्रांति'(1981) देश के स्वतंत्रता संग्राम पर बनी एपिक फिल्म रही। जबकि, 'शोर' पारिवारिक फिल्म थी, जिसमें भी एक संदेश दिखाई दिया। लेकिन, मनोज कुमार के फिल्म निर्माण का भी एक फार्मूला था। उनकी देशभक्ति वाली फिल्मों में दर्शकों को बांधने के लिए वो सब कुछ होता था, जो जरूरी है। फिल्मों में नए-नए प्रयोग करते हुए मनोज कुमार इतने विश्वसनीय हो गए थे कि उनकी फिल्म में वे जो भी प्रयोग करते, सहयोगी कलाकार आंख मूंदकर सब करते जाते।

इस विश्वसनीयता का फायदा उठाते हुए मनोज कुमार ने देशभक्ति का मुलम्मा चढ़ाते हुए अपनी फिल्मों में वह सब शामिल कर लिया, जो आमतौर पर मुश्किल होता है। मनोज कुमार ही थे जिन्होंने 'रोटी कपडा और मकान' में हाय हाय रे यह मजबूरी में जीनत अमान को जी भरकर भिगोया। आटे की बोरियों और तराजू के पलड़ों पर मौसमी के रेप सीन को लसलसे तरीके से फिल्माकर दर्शकों की सांसों को गर्म किया। उन्होंने इसी फार्मूले को अपनाते हुए 'पूरब पश्चिम' में सायरा को ग्लैमर में ढालकर दिखाया, 'यादगार' में नूतन जैसी पारिवारिक अभिनेत्री को स्विमिंग सूट पहनाया और 'क्रांति' में हेमा मालिनी जैसी सात्विक समझी जाने वाली नायिका को न केवल पानी में तरबतर किया, बल्कि चतुराई से उनके मादक शरीर को परोसकर बॉक्स ऑफिस पर सिक्के बरसवा लिए। बावजूद उनकी फिल्मों में देशभक्ति का जज्बा जरा भी कम नहीं हुआ।

साल 1961 में मनोज कुमार को बतौर हीरो 'कांच की गुड़िया' से ब्रेक मिला। इसके अगले साल विजय भट्ट की फिल्म 'हरियाली और रास्ता' ने उनकी ज़िंदगी का रास्ता बदल दिया। 40 साल के फिल्म करियर में मनोज कुमार ने कई फिल्मों में काम किया और खुद भी फिल्में बनाई। इन सभी फिल्मों में उन्होंने फिल्म के कॉन्टेंट और फ़ॉर्म पर लगातार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कहानी लिखने में उनकी महारत थी। वो जानते थे, कि भारतीय दर्शक भावुक होते हैं, इसलिए वो ऐसी कहानियां रचते थे, जिनसे दर्शक आसानी से जुड़ाव महसूस कर सकें। उनकी हर फिल्म में हर दर्शक के लिए कुछ न कुछ होता था। 'शोर' एक परिवार की खूबसूरत कहानी थी, जिसने मनोज कुमार को निर्देशक के तौर पर स्थापित किया।

मनोज कुमार के करियर की शुरुआत 1975 में आई फिल्म फैशन (1957) में एक छोटे से किरदार से हुई। पर, उन्हें असली पहचान 1962 में आई फिल्म 'हरियाली और रास्ता' से मिली। अभिनय के बाद उन्होंने निर्देशन में भी हाथ आजमाया और इसकी शुरुआत 1965 में आई फिल्म 'शहीद' से की। इसकी कहानी भगत सिंह के जीवन पर आधारित थी। 1967 में मनोज कुमार ने तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर उनके 'जय जवान जय किसान' नारे पर 'उपकार' बनाई। 'उपकार' भले ही लाल बहादुर शास्त्री के कहने पर बनी, लेकिन वे इसे देख नहीं सके। 1966 में शास्त्री जी ताशकंद के दौरे पर गए थे। लौटने के बाद वे फिल्म देखते, लेकिन ताशकंद में ही इंडो-पाकिस्तान वॉर में शांति समझौता साइन करने के अगले दिन 11 जनवरी 1966 को उनकी मौत हो गई। इसके एक साल बाद 11 अगस्त 1967 को फिल्म रिलीज हुई। शास्त्री जी को फिल्म न दिखा पाने का अफसोस ताउम्र मनोज कुमार को

रहा। फिल्म हिट रही और इसके गाने ऐ वतन, ऐ वतन हमको तेरी कसम, सरफरोशी की तमन्ना और 'मेरा रंग दे बसंती चोला' काफी पसंद किए गए।

मनोज कुमार ने देश भक्ति की आड़ में केवल अंग प्रदर्शन का फार्मूला आजमाकर ही सफलता नहीं बटोरी। फिल्मों के तकनीकी पक्ष, कैमरा और फाइटिंग सीन में भी उनकी जबरदस्त पकड़ थी। 'उपकार' और 'शोर' की फाइटिंग सिक्वेंस एकदम वास्तविक जैसी लगती है। 'शोर' में झूले का प्रयोग और बिजली की लुकाछिपी के दृश्य अद्भुत थे। 'पूरब पश्चिम' की पहली कुछ रील ब्लैक एंड व्हाइट थी। लेकिन, ब्रिटिश सरकार यूनियन जैक के उतरते ही तिरंगे के चढने के साथ फिल्म का कलर में बदलना ऐसा प्रयोग था, जिसे उस समय करना तो दूर सोचना भी मुश्किल था। भाई की असफलता, पिता की मौत और पारिवारिक विवाद से तंग आकर मनोज कुमार ने शराब में डूबकर अपना तो बड़ा नुकसान किया लेकिन उन दर्शकों का भी भारी नुकसान किया जो आज के परिप्रेक्ष्य में देश की समस्याओं का कुछ सार्थक समाधान ढूंढने के लिए सिनेमाघर का अंधेरा कौना तलाशते नजर आते हैं।

बचपन से ही वे दिलीप कुमार के बड़े प्रशंसक थे। दिलीप साहब की फिल्म शबनम (1949) मनोज कुमार को इतनी पसंद आई थी कि उन्होंने उसे कई बार देखा। फिल्म में दिलीप कुमार का नाम मनोज था। जब मनोज कुमार फिल्मों में आए तो उन्होंने दिलीप कुमार के नाम पर ही अपना नाम भी मनोज कुमार कर लिया। बाद में मनोज कुमार ने अपने निर्देशन में बनी फिल्म क्रांति (1981) में दिलीप कुमार को डायरेक्ट भी किया। उन्हें फिल्म मिलने की घटना भी किसी फ़िल्मी घटना से कम नहीं थी। एक दिन जब लाइट टेस्टिंग के लिए मनोज कुमार हीरो की जगह खड़े थे। लाइट पड़ने पर उनका चेहरा कैमरे में आकर्षक लग रहा था। एक डायरेक्टर ने उन्हें 1957 में आई फिल्म 'फैशन' में एक छोटा सा रोल दिया। रोल छोटा जरूर था, लेकिन मनोज कुछ मिनट की एक्टिंग में अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहे। उसी रोल की बदौलत मनोज कुमार को फिल्म कांच की गुड़िया (1960) में लीड रोल दिया गया। पहली कामयाब फिल्म देने के बाद मनोज ने रेशमी रुमाल, चांद, बनारसी ठग, गृहस्थी, अपने हुए पराए, वो कौन थी जैसी कई फिल्में दीं।

मनोज कुमार को विलेन का किरदार निभाने वाले प्राण की इमेज बदलने का भी श्रेय दिया जाता है। 1966 में आई फिल्म 'दो बदन' में मनोज कुमार ने पहली बार प्राण के साथ काम किया और दोनों दोस्त बन गए। प्राण को तब फिल्मों में निगेटिव रोल मिलते थे। ऐसे में उनकी छवि बदलने के लिए मनोज कुमार ने उन्हें अपनी फिल्म 'आह' में पॉजिटिव रोल दिया। पर, ये फिल्म फ्लॉप रही, दर्शकों ने प्राण को नापसंद किया। इसके बाद मनोज कुमार ने अपनी फिल्म 'उपकार' में उन्हें मलंग बाबा का रोल देने का फैसला किया। फिल्म में अपना किरदार पढ़ने के बाद प्राण ने कहा भी था कि स्क्रिप्ट और मलंग का किरदार दोनों बहुत खूबसूरत हैं। लेकिन, एक बार सोच लो। मेरी छवि खूंखार, शराबी, जुआरी और बलात्कारी की है। क्या दर्शक मुझे किसी साधु के रोल में अपना सकेंगे। इसके बाद फिल्म में मलंग बाबा का किरदार जिस तरह लोकप्रिय हुआ वो आज भी याद किया जाता है।

'पूरब और पश्चिम' में उन्होंने मदन पुरी के साथ यह फार्मूला अपनाया। घाघ और स्वार्थी इंसान की भूमिका के लिए बदनाम मदनपुरी को मनोज कुमार ने विदेशी में बसे एक असहाय बाप के रूप में इतनी सहजता से पेश किया कि उनका रंग ही बदल गया। प्राण और मदन पुरी के अलावा प्रेमनाथ से भी उन्होंने 'शोर' में दबंग और दयावान पठान की भूमिका करवाकर उनका कायाकल्प कर दिया। इसी तरह प्रेम चोपड़ा, जोगिंदर और मनमोहन की इमेज को बदलने में भी मनोज कुमार कामयाब रहे। वे पहले फिल्मकार थे, जिन्होंने पाकिस्तानी कलाकारों को हिंदी फिल्मों में मौका दिया। लेकिन, अब ये सब बीती बातें हो गई। अब सिर्फ उनकी फ़िल्में ही बची हैं, जो उनकी याद को ताजा करती रहेंगी कि एक थे मनोज कुमार!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'इंडियन आइडल' पर संगीत कम पाखंड ज्यादा !

अशोक जोशी

'इंडियन आइडल' के निर्माताओं की ज्यादा रुचि प्रतिभागियों की गायन प्रतिभा को निखारने में नहीं, बल्कि उनकी भूख गरीबी और अवसाद को दिखाने में है। अगर आप रीजनल

रियलिटी शो देखते हैं, तो वहां दर्शकों को प्रतिभागियों के बारे में शायद ही पता होगा। उनका पूरा ध्यान सिर्फ गायन पर होता है, लेकिन नेशनल शो में प्रतिभागी के जूते पॉलिश करने की कहानी, उनके मां-बाप कैसे बदहाली में जी रहे हैं, इसके अलावा अब तो शो में झूठी प्रेम कहानी दिखाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

इं डियन आइडल सीजन 15 का ग्रैंड फिनाले 6 अप्रैल 2025 को हुआ। इसमें टॉप 5 कंटेस्टेंट्स में स्नेहा शंकर के अलावा सुभजीत चक्रवर्ती, अनिरुद्ध सुस्वरम, प्रियांशु दत्ता, मानसी घोष और चैतन्य देवधे शामिल रहे। मानसी घोष ने 'इंडियन आइडल 15' की ट्रॉफी अपने नाम कर ली। इसके साथ ही 25 लाख रुपये की प्राइज मनी के साथ मारूति कार भी अपने नाम की। यह बात अलग है कि हर बार की तरह इस बार भी नतीजे आम दर्शकों की अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहे। लोगों का मानना था कि इस बार यह ट्रॉफी स्नेहा शंकर या चैतन्य देवधे मे से किसी को मिलना थी लेकिन जिस तरह से मानसी घोष का नाम आखिर में सबसे ऊपर आया उसे देखकर सभी हैरान हैं।

पर्दे के पीछे से यह खबरें आ रही है कि टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाले रियलिटी शो में रियलिटी जैसा कुछ नहीं होता। वह ड्राफ्टेड या स्क्रिप्टेड होते हैं। यह बात सोनी टीवी पर इन दिनों सप्ताहांत प्रसारित होने वाले सिंगिंग रियलिटी शो इंडियन आइडल पर दोहरी साबित होती है। एक तो इसमें रियलिटी जैसी कुछ बात नहीं है दूसरे इसका नाम भी अपनी कसौटी पर खरा नहीं उतरता। वैसे आइडल का अर्थ प्यारा भी होता है और बेहूदा और बकवास भी। लेकिन जिस तरह से एक के बाद एक इसकी परत उधड़ती जा रही है उससे अब यह कहा जा सकता है कि अब यह किसी तरह से आइडियल नहीं रहा है।

शो की प्रस्तुति से लेकर प्रतिभागियों के चयन तक सभी का एक सेट फॉर्मेट हाता है। इसमें जिस तरह से प्रतिभागियां का चयन किया जाता है, उस पर भी बार-बार अंगुलियां उठती रही है। लगता है कि इस शो के आयोजकों का एक बंधा बंधाया फार्मेट है, जिसमें कुछ मध्यमवर्गीय परिवार के लोग, कुछ दूर दराज के तो कुछ भूख से परेशान घरों से आए लोग हैं जो दाने दाने को

मजबूर है। सवाल यह उठता है कि जिन लोगों का ध्यान रोटी से जरा भी नहीं हटता उनके पास इतने संसाधन कैसे उपलब्ध हो जाते हैं कि वह दूरदराज से आकर न केवल प्रतियोगिता के लिए आवेदन करते हैं, बल्कि महानगरों तक आकर ऑडिशन देने तक में सफल हो जाते हैं।

इस बारे में शो के पूर्व विजेता अभिजीत सावंत आरोप लगा चुके हैं कि यह संगीत का कार्यक्रम है न कि गरीबी दिखाओ योजना का कोई हिस्सा है। अभिजीत ने एक इंटरव्यू के दौरान शो से संबंधित कुछ अहम खुलासे किए। उन्होंने कहा था कि आजकल रियलिटी शो के मेकर्स किसी प्रतिभागी के टैलेंट से ज्यादा इस बात पर ध्यान देते हैं कि वह कितना गरीब है। इतना ही नहीं अभिजीत सावंत ने आगे कहा कि अगर आप रीजनल रियलिटी शोज देखेंगे तो उनमें दर्शकों को शायद ही कंटेस्टेंट के बैकग्राउंड के बारे में पता होगा। वहां लोग सिर्फ सिंगिंग पर ध्यान देते हैं, लेकिन हिंदी रियलिटी शोज में प्रतिभागियों की दुख भरी कहानियों को ज्यादा सुनाया जाता है।

इंडियन आइडल की गिरावट का सबसे बड़ा कारण है उसके बासी हो चुके निर्णायक और उबाऊ प्रस्तुतकर्ता अर्थात एंकर। शो का आरंभ एंकर आदित्य नारायण सिंह की बकवास शुरू होता है। उनकी असफलता का सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि गायक के रूप में नकार दिए जाने के बाद वह एंकर का दायित्व ग्रहण कर दर्शकों को इतना ज्यादा ऊबा चुके हैं कि उन्हें अब आदित्य नारायण की हरकतों पर खीज होने लगी है। ऐसा नहीं कि आदित्य इंडियन आइडल पर ही तमाशा कर रहे है। टीवी के बाहर सार्वजनिक जगहों पर तमाशे कर चुके हैं और इस शो के मंच पर भी उनकी बकवास जारी है। इस बार तो सोनी ने एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आदित्य नारायण के माता

पिता को बुलाकर इसे परिवारवाद का जीता जागता उदाहरण बना दिया। सोनी के इस कदम की सभी जगह थू थू हो रही है।

इतना ही नहीं शो में प्रदर्शन का स्तर इतना गिर चुका है कि इसमें गानों के साथ-साथ उटपटांग हरकतों को हाईलाइट किया जाने लगा है। इसमें आए दिना प्रतिभागियों का बेहद मजाक उड़ाया जाता है। उन्हें अजीबोगरीब कपड़े पहनाकर अजीब हरकतें करने को कहा जाता। कभी बंदरों की तरह हरकत करने को कहा जाता है। एक सीरीज में एक गायक और एक गायिका की मनगढ़ंत प्रेम कहानी के परम्परागत तरीके से आगे बढ़ाया जाता है। हर बार ऐसा ही होता है बस चेहरे बदल गए है। कभी पवन राजन तो अयोध्या से आए शो के विजेता ऋषि सिंह तो अरूणिता तो कभी बिदिप्ता चक्रवर्ती इसकी पात्र होती हैं।

अब तो इस शो के मेहमान भी स्थायी हो गए हैं। थोड़े अंतराल के बाद धर्मेन्द्र, आशा पारेख और उदित नारायण सिंह तो कभी प्यारेलाल या आनंदजी सपत्नीक आ जाते हैं। कुछ कमी रह जाती हैं, तो गोविंदा सपत्नीक आकर उलजुलूल हरकतें करते है। एक एपिसोड में नेहा कक्कड और उनके पति ने कैमरे के सामने जिस तरह चिपका चिपका की उससे यह पारिवारिक शो की जगह ओटीटी की सीरिज ज्यादा लग रहा था। उसके बाद एक एपिसोड में फिल्मो से बोरिया बिस्तर बांध चुकी रीना राय और जया प्रदा आ गई।

शो की कंटीन्यूटी को लेकर भी कई बार प्रश्न चिन्ह उठते रहे हैं । एक कार्यक्रम के दौरान अमित कुमार ने एक प्रतिभागी को एक हाथ घडी यह कहकर उपहार में दी कि यह किशोर कुमार की घड़ी है। कार्यक्रम के दूसरे गाने के दौरान वह घड़ी फिर से अमित कुमार के हाथों में दिखाई दी। इसी तरह हाल ही में जब राकेश रोशन आए थे तो उनकी हाथ घडी कभी दाएं हाथ में दिखती थी तो कभी बाएं हाथ में। इस तरह की खामियां शो के तकनीकी पक्ष पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं।

अजीबो गरीब कहानियों, उटपटांग हरकतों के अलावा इंडियन आइडल पर एक इल्जाम यह भी लगता रहा है कि इसके सभी एपिसोड स्क्रिप्टेड या पहले से लिखी पटकथा पर आधारित होते हैं। कहने को यह लाइव प्रोग्राम होता है। लेकिन, इसके एक एक डायलॉग और घटनाक्रम पहले से तयशुदा होते हैं। अमित कुमार पहले ही आरोप लगा चुके थे कि उनसे किसी खास प्रतिभागी की तारीफ करने को कहा गया जिसके लिए उन्होने मना कर दिया। ख्याति प्राप्त गायक शान भी कह चुके हैं कि सभी कार्यक्रम स्क्रिप्टेड होते हैं और एक बार गाने के बाद उसे स्टूडियो में ठीक कर प्रस्तुत किया जाता है।

हाल ही में समाप्त हुए इंडियन आयडल के एक शो में हेमामालिनी आई थी। इस कार्यक्रम की एक क्लिप लीक हुई थी जिसमें हेमा मालिनी के हाथों में लिखी हुई स्क्रिप्ट थी जिसके अनुसार उन्हें कार्यक्रम करना था। इससे इस रियलिटी शो की रिएलिटी पर शंका होने लगती है। पहले कभी इस शो को देखने के लिए दर्शक सप्ताहांत का इंतजार करते रहते थे लेकिन अब यदि उनसे यह शो छूट भी जाए तो उन्हें कोई मलाल नहीं होता। क्योंकि, अब इंडियन आइडल किसी भी दृष्टि से आइडियल नहीं रहा है।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

International Year of Cooperatives 2025

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

सहकार से समृद्धि

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

राज्य स्तरीय सहकारी सम्मेलन

एवं

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड तथा मध्यप्रदेश सरकार के मध्य

सहकार्यता अनुबंध निष्पादन कार्यक्रम

डेयरी किसानों से दूध की खरीदी सुनिश्चित कर उनकी आय में वृद्धि की अहम पहल

मुख्य अतिथि

अमित शाह

केन्द्रीय मंत्री, गृह एवं सहकारिता मंत्रालय

गरिमामयी उपस्थिति

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

13 अप्रैल, 2025 | दोपहर 1:00 बजे | रवीन्द्र भवन, भोपाल

हर ग्राम पंचायत में डेयरी सहकारी समिति एवं कलेक्शन सेंटर होंगे स्थापित

- दुग्ध उत्पादकों को उनके **द्वार पर ही दूध विक्रय** की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी
- 6 हजार दुग्ध समितियों को बढ़ाकर 9 हजार एवं दुग्ध संकलन 10 लाख से 20 लाख लीटर प्रतिदिन करने का लक्ष्य। **18 हजार गांव होंगे लाभान्वित**
- को-ऑपरेटिव-पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप (सीपीपीपी) के माध्यम से सहकारी समितियों को उपलब्ध कराये जायेंगे व्यवसाय के नए अवसर

सांची Sanchi

प्रदेश के साँची ब्रांड की पहचान को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की दिशा में कदम...

- ₹ 2500 करोड़ के निवेश लक्ष्य से प्रत्येक जिले में **साँची डेयरी** के साथ **मिल्क कूलर, मिनी डेयरी** एवं **चिलिंग सेंटर** खोले जायेंगे
- साँची डेयरी संयंत्रों की क्षमता में वृद्धि करते हुए 18 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़ाकर 30 लाख लीटर किया जायेगा
- **आय में वृद्धि**, डेयरी किसानों की आय ₹ 1700 करोड़ से बढ़ाकर ₹ 3500 करोड़ करने का लक्ष्य

₹ 787 करोड़ के निवेश से दुग्ध प्रसंस्करण के लिए विकसित होगी बुनियादी अवसंरचना

- दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हेतु नवीन योजना **"डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना"** की स्वीकृति। योजना में 25 दुधारू पशुओं की ₹ 42 लाख तक लागत की डेयरी इकाई लगाने के लिए ऋण सहायता
- स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति - 2025 अंतर्गत प्रदेशभर में **पीपीपी मोड पर स्वावलंबी गौशाला** का निर्माण किया जाएगा
- गौशाला में प्रति गाय दी जाने वाली **₹ 20 की राशि बढ़ाकर ₹ 40** की गयी है

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhypradesh @JansamparkMP JansamparkMP

D -11007/25